

प्रस्तावना

मध्येगत की ओर से या गान-सबय नये बनावारों की सदीनत्य राजियों में ठरीं हुई अनेत प्रवार की बनानियों प्रस्कृत कर रहा है। अभी तक हमारे बागलीकारों के पहले संघे में समाज के विवारी पर कड़ीर भागीवता बच्चे समाज-सम्बारका हना आवस्यक बाये किया जिसमें उद्देश्य-प्रधात नाम भाषा-संगो का एवं नाम करमानी स्वयमा जो सब प्रवार के पारकोड़ी स्थित्या योग्यन्तको मुख्य करनेते स्वियं प्रयोग सम्भाग जाना स्हार ह

द्दरी बीच विद्यविद्यालयोथे नया हिन्दी गाँह या मामेलनकी गरीक्ताओं है हिन्दी का स्थान अवन्य हो जाने पर हिन्दी का स्थान अवन्य आप्त प्राप्त अवेश हो जाने पर हिन्दी का स्थान अवन्य आप्त प्राप्त अवन्य स्थान स्थान हिन्दी को स्थान स्थान है हिन्दी के स्थान स्थान है हिन्दी के स्थान स्थान स्थान के स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान के स्थान स्था





. प्रकाशकीय .

अप्रतिक साहित्य से कार्यान्यों, तो वो सरवद्गी त्यान साहि है कि विशे भी वर्ष ने पान के लिए मी है । विश्वनीत्य सेनी बेर् सेन्य के लिए मी है । विश्वनीत्य सेनी बेर् सेन्य के स्थान के आपने दिन आर्थिक सहित्य का प्रसान के स्थान के सेन्य कहि है । कहिन्द ने सर्था है सेन्य कहि है । कहिन्द ने स्थान है है ।

हार होते व बारण एन नवन वा निर्माण के अवस्थि को स्वाहर है।
प्रमुख के समाप से प्रविच्छ नामण में निर्माण स्वाहर की मी
स्वाहर के स्वाहर से प्रविद्या नामण में निर्माण की नामी हैं। इस्तुरी
स्वाहरीन की नाहें हैं की निर्माण कार्य का मी
स्वाहर से प्रविद्या नामणी कार्य का मी
स्वाहर से समाप के मामणी कार्य का मी
स्वाहर से समाप का मामणी कार्य का स्वाहर में समाप के स्वाहर के
स्वाहर की सी
सामणी का मामणी कार्य कार्य का स्वाहर मी
सामणी कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य का समाप कार्य कार कार्य का

हरर वर हुई स्टिंग्डम

Contact from 1 tours

کے مطرف کا ما



1 5 1

पूर्व बर्वजापूर्व, विषयपूर्व नया नारकोद आहि सभी देनियों में तिसी यह जीन प्रमानन स्थानका कोई ऐता विषय नहीं एहा दिने कहानियों के इसमें ने किया है। एक सम्बोद कार्यों और विश्वेता है। अध्यन प्रमान प्रमान स्थान

इस पुनर्से कहाती और पिनेसा दो अप्तन्त प्रवस भावनंत्रधाके माधन याने बाते हैं और इसीरिंग नकारके गयी देखों में इन देशों सावनोका प्रवेश नोक्ष-विधाने लेकर बीवधि और स्थापर-माधपीके दिवारन उक्त में हैं। उस हैं। इसलिंग इसका जीवन परिवार्तन अस्तुन अस्तिप्त गया भीनान

हैं।

मुक्के वह उन्नेम करते हुए अञ्चल हुएं होता है कि भी ऑमनेमक्य उत्तामान एक एक, तीन होन ने अञ्चल अभवतान तथा परिभागे पहुँचे पहुल व्यक्तिको प्रधानता न देकर कमाहतिको परीच्या देकर रूप गरूर नुस्कृत व्यक्ति ने बहुतियोक्ति संस्कृत स्वत्यन विशेवपूर्ण सीमक्यार के साथ क्या

है। मन्द्रे विश्वास है कि छात्र इनका जानन्द सँगे और द्वित्री मनार इनका

आदर करेगा। कासी

क्वेछकूष्ण १मी, २०४८ (२९ ५.५१) सीवाराम पतुर्वेशी





कहानी पर दो शब्द

कहानी क्या है। यह घटना प्रस्त है जो बहानी नाम व नाम है। पारभाषा अपना नुहु पारमें को भार दो कर कहानी जहां सम्बद्ध साम मान है। पारभाषा अपना नुहु पारमें को भार को कहानी जहां सम्बद्ध साम है। तो भार का पारभ ने बहानी को पारभाषा के की है— वहाना घटनाओं पर सदक कम है जो विशेष पारभाम पर पूजिल के की बहान के मान है। यह में कहा की कहानी के मान कहानी के मान के मान के मान है। यह घटना स्वार्य हैं, सामाय मान की मान कहाने के मान कहाने के किया कहाने के स्वार्य की क्या की स्वार्य की स्वार्य की की स्वार्य की स्वार्य की की स्वार्य की की स्वार्य की की स्वार्य की किया की स्वार्य की स्वार्य

नश्यान्तवार विनय घरवा न नहाना पर प्राप्त न पार्च है । नवस्यन नह पार्च नाम्य पर प्रमुख रहा ना है और एवं प्रमुख रहा का प्राप्त है। प्राप्त नाम्य पर प्रमुख रहा ना है। और एवं प्रमुख रहा ची प्राप्त है। प्राप्त नाम्य पर प्राप्त है। प्राप्त नाम्य प्राप्त है। प्राप्त प्राप्त प्राप्त है। प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त का नाम्य प्राप्त प्राप्त है। प्राप्त प्राप्त प्राप्त है। प्राप्त प्राप्त है। प्राप्त का प्राप्त का प्राप्त है। प्राप्त का प्राप्त है। प्राप्त का प्राप्त क

ş

उपन्यास और कहानी जीवन की एक फलक नौत्र हैं । उपन्यास में हम जितने विस्तार के साथ बडने हैं कहानी में नहीं जा सकते । इसलिये अच्छी बहानी के लिए घटनाओं की शूखला बहुत लबी न होनी चाहिए। समय का भी ध्यान जानस्यक है । कहानी के लिए घटित होने वाला समय बहुत सबा न होना चाहिए । ममय की स्वान कहानी में शिविसता सा देनी है। कम समय और कम घटनाये बहानीकार को कहानी के सर्वांगीण नौन्दर्व के बढाने का अवगर प्रदान करती है।

कितने समय की घटनाओं का वर्णन बहानी में लाया जाय--इपके लिए कोई नियम नहीं हो सकता परन्त इसका ध्यान रखना आवश्यक है कि केपल मुख्य मुख्य घटनाओं का ही वर्णन किया जाय।

कहानी का हृदयशाही होना ही उनकी मफलना है। जिन ध्येय और माबना में जिस स्थल पर लेखक ने जो कुछ लिखा है यदि उसी रूप में पाइक ने उन्हें बहुय न कर पाया तो कहानी सफल नहीं मानी जा सकती। यह तभी समय है जब प्रत्येक पटना और पात्र का चित्रण स्वामाविक हुआ हो। लेखक अब तक अपने को कहानी में विणय प्रत्येक परिस्थिति और पात्र के रूप में रखने में भववं नहीं है नब नक उनकी लिएी हुई कहानी आकर्यक नहीं हो सकती।

बहानी का कथानक (Plot) पहिले ने निश्चित होना चाहिए। कुछ लेलक दिना पूरा कमानक समक्ष रखे ही लिखना प्रारम कर देने हैं। परिणाम यह हाता है कि वे अंधरे में हदालने हुए चलने हैं और बहुधा मार्ग अध्य हो जाते है ।

कहानी में पात्र भी जिनने ही कम हो वह उननी ही अच्छी होगी। अधिक पात्रों का समावेच उपन्यास म हो सकता है। उसे लेखक अपनी

मविपाननार उपन्यास की ममाप्ति के पूर्व ही अहाँ चाहे छोड़ सहता है।

المراجع والمراجع المراجع المرا

مرا المرا المراجع المر स्वाहरा बहरा। उसके तेल केल बेर करा रहे केल हैं के बर्ग क िर्देश कर्तने केवल करण को रूप एक करते हैं। करण एक करते होता करहर वेंक हेंब सुंबर के नाम पहली प्राप्त हैं की किए हैंब पहार कर उपने प्रण बाले की बरेशन में करें । करी स्वार्य के का करिया के किस कर की किस कर की किस के किस की किस के Western Election and the second in white عربية والمعربين هُ وَ مُوا اللَّهِ الللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّمِلْمِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّا

प्रका करता का इतक कार्या करते हैं, कुछ किए हुए के के कहा है। करम कर देते हैं जरूरी बन्ते हैं। करण बेले की क्या में रह पह करना बर्डिंग है के पूर्व बेन्त हैंने डेन केन बाल गी A grade at a real day that he was at a few and and the same of the at you with a car for the first of the state والمراجعة والمراجعة المراجعة ا के बार बार है करते होते हैं के प्रकार करते हैं। के बार बार है करते होते हैं के प्रकार करते हैं के कार्य है के The age of the of the same of

the sea this leader is alway being the transfer of the season of the sea

والمراجع والم والمراجع والمراجع والمراجع والمراجع والمراجع والمراجع والمراج The state of the s

यह दोना मिलने के परचान ही कहानीकार का कार्य बारभ होता है। वह अपन परिश्रम और कीमल के द्वारा उमे एक मौलिक दोने में बातकर आकर्ष है बना देना है । कहानी लेखक को अपनी स्मरण-पुस्तिका म

मसय मुमय पर उठे हुए बहाती के बोम्य विचारों को अफिन करने रहता चाहिए। उसे अपने वानावरण का भी अच्छा अध्ययन करने रहता जाभ-मह होता है। देखने हम सभी लोग हैं। परन्यू यदि एक घट टहनने में पश्चाच् कोई हमम पूछे कि मार्ग में हमने बया बया दला और बया बिगप बात पार्ट तो सभवत दा चार मोटी मोटी बातो को छोडकर हम अभिक न प्रताया पार्च । क्यानी केमक की सर्वत अवस और सर्वत रहतं की अवद्य∉ना है। कहानी की नकरना बहुन कुछ प्रारम पर निर्भर है। "होनहार विरयान के हान चीवने पान" बाजी बहावन यहाँ भी चरिनामें होती है। अन कहानी-कला की ओर भहन बादों को कुछ दाना का प्यान रफ्ता आवस्पर है। पहिन्दी बात ना यह है कि बहाबी का भारभ साप्ट और जाय-पक शाना चाहिए। कलानी के इंछ बारशिक बारवा ने ही गाँद हुमारे भन का अपनी बार नहीं खोच निया तो प्रमुखी सफलतों म गाँदेह हैं।

उसके है मानसन्बर कर पूरी बहाती अक्टि बहुती है और बढ़ उमें किमी भी बकार आरम्भ कर सकता है। यरन्यू उसका यह समस्त्रता ठीक नहीं कि उसी क समान पाटक भी आगम्भ करने ही कहाती समभग 1 देशक की अपने को पाटक की स्थिति य रमकर समाधने की आवश्यकता है। तभी बह समझ पापना कि वह प्रारम ने ही आक्यक केंग्र बनाई ना संबंधी है। किमी अतिबि के जान पर उसका प्रसन्न करन के लिए, ऊठ में बचाने के लिए हम पर की सन्दर इस स सजात है और सबस अधिक अध्येष प्रकार

न्यांते हैं । याद्रक ही बार्च राजा मान्ति है हमों के लिए हमारा बहाने वालास्त है बाँच बहुता है, बाहक ही बसेंग कर है। पाँच बहेंग करने के ताब है। होते हुम्हार बरोबबटा बबस मृहा देखी के हमें बार्च के المستر والمراج المراج المسترد والمراج والمراج المراج المرا أيم الما المالية المال

والمراجع المراجع المرا المستعربة والمناس المناس المستعرب المستعرب المناس ا न्दोर्चन वरमा हो कृत्व है । जैसे उनक उत्तर को करावर को हर विचेत्र हरू राज्या कावन में हुएक दूर करने हैं उसी कारत बारीस बकारद को स्वादन करानेकों के प्राप्त । अने बार्ड बहानोकों के प्राप्त हुकर المراجع المراج कर दर्भ की कोड पहुंच पढ़ा की गाउन करने उपने । के की देने बीन المعالم المعال को सरस्टा का प्राप्त हेना बहुन जाउरस्व है। इन्दे मुद्द में बुत नेत्रव कार्य के अन्त्रव में बाद बहराने भी रहने

हे बोर हुछ प्राप्त में होते राजिनन के व नहीं मुक्कते । ना रेसक केंद्र के इन करता सबका है। एक है साथ प्राप्त बचने बाली में की केंद्रस्य वरे बर करक रहेकर के प्रवहा है कोच भए की जिल्हा एक किरोबह असे पर बन्ते हेरे बार्के में को बन्तर की हैं। हा हिम बात का बनाब कराब हाउस कित्र के तार के कर बात होती नहीं कर कि स्टू करते क्रिक्ट में हैं। दूर बनो बाद । मास्त्रें कर्त हैं कि बादि बीटें बनरेंद्र तेंद्री कीत हिं है के स्पत्नी बारों के बहताब हैंचा राज्यके किया के प्रवृत्ता है बेटबे राई काल के उनकी किरोह जाता है कार सम्बुद्धि के हैंसा निरंद कि बोर्ड बोर्ड कार है जो रह तेन्द्र है के प्रकार के दान बोर्ड

गस्प-सङ्ख्य

नांभरी बार भाषा में मुहाबिशों का प्रयान है। जैसे काव्य में अन-कारों के दिवन सेन्दर्व नहीं लाखा जा मरना वंग ही कहानी में मुहाबिसों के दिवा उने रान्देक नरी किया जा मकता। उई बोलन बालों की भाषा में मुहाबिना की मरमान है। इसीनियें उन्हें भी कहानियाँ बन-मन को मोहर आवर्षिन करनी हैं। और इसी कारण ने उई माहित्य में मान्य पराने बाले प्रयन्त को भागा में मुहाबिशों का प्रयोग हुम ठोक उसी प्रकार का पाने हैं। क्रिनों बालने बाको जनना चा पर सो बोलनी अपनी स्थानीय साथा में

नुहाबियों के प्रयोग की बद्रावें।

षीनी बाण कहानी की बारा अवाहिकता है। नहानी नेतक रा रानेन्स है कि बह बहानों को नित्तर तार्य बहाना चंदा अर्थ बनने प्राहु राने ने बहकर कहानी में आई हुए कियों आचुकरातूर्य अप पर हो दिख का नुकार निकालना प्रारंभ कर दिखा तो कहानी में दिविक्ता आ जानणी। नुकार महानी की नुक्ता हम दक्ष नहीं ने दे महने हैं जो निरम्पर बहुनी बड़ानी है। वह नक बह बहती चल रही है तभी तक उपका नव दिनक, दिए पहिला केर स्वारंभ समझ है। यदि जाने क बता, बहुन बना हा तमा ना किने मर्था गुण देख में परिवर्तन हा जायेचे। और बहुन बना हहानी की भी है।

बहरती को परिवास तुम उनकी रोक्डम है। ये बे सिन्तर राश्च । प्रवास ही करानेकार में बेबन वही माण्यते हैं सम्ब किये करानी में दिवसमार्ज़ कराने के बाहिय । किया बाइक परार्ग आप उपय 'बसाना बड़ों साथ कि —' उपया अब बाग बार हुना ' और उप उपयान बता हूना हुन नन नक पहुँच जाय। स्था बन्द में होन ह पर राज्य हो नाथा हुन पुरस्त कर कर हुँच साथ। स्था बन्द में होन ह

कहाना पर दो शब्द कहानी में छ्टी बान जो ध्यान देने को है वह पात्रों को कम रतना

हैं। बहुत से लेलक अनेक पात्रों और अनेक स्थानों का नाम कहानी में भर देते हैं। परन्तु ऐसा किसी भी दसा में न होना चाहिए। पाठक धीरे-धीरे पामी और त्यानों ने परिचित होता है और एक छोटो सी कहानी में बहुत अधिक

पात्र हा देने में न तो तबका चित्रण ही सुन्दर किया जा सकता है न उसका समुचित विकास हो हो पाना है। यात्रों में नायक का भी प्रवेश ययासीझ होना चाहिए। अधिक पात्र और स्थल के लोभी लेखक को कहानी की और

न आकर उपन्यास की ओर भुकना चाहिने जिसमें तात्विक रूप में अधिक अन्तर न होकर योडा हो परिवर्तन छाना आवस्मक होता है। हिता में हम अपनी मुविधानुसार जो बाहे नहीं लिख सकते। अतः कहानी की एक निश्चित रूपरेला पहले से बनी रहनी चाहिये। प्तमें अनगंत वातें कभी भी न लानी चाहिये। रत्तों के निर्वाह का भी ध्यान

रसना आवस्यक है। यदि हास्यरस की कहानी है तो करूनापूर्ण वर्णन न लाना हो उत्तम है। चतुर नेतक पात्रों के कथोपक्रयन द्वारा ही अपना उद्देश्य पूरा करता है। यह स्वयं कुछ नहीं कहता। क्योपक्रयन बितना ही नाटकीय उंग से बस्तुत किया जा सकं कहानी उतनी ही आकर्षक होयी।

कहानी का प्रारंभ किसी घटना से ही तो यह अधिक आकर्षक ही सकती है। यकायक कोई धडाका हुआ और नारों और ने लॉग जमा हो गरे।

जीवा, पृंधा और समाधान होने पर लौट गर्ने। ठीक ऐसी ही पटना ने भारभ होने बाली कहानी पाठकों को खींच लेगी और उनको विज्ञाता के वत पर उन्हें अपने में व्यस्त रखती है। रत सब बानों को ध्यान में उसकर कहानी लेखक को आने बडना चाहिए।

रम्तु कुट न्यामाविक बच्चे भी होतो है जो नेसक को सहायता देने वासी

वर्षे हैं। इसकी अपनी रोजर और जिनार धारा बहन भी प्रस्थित के हान

e

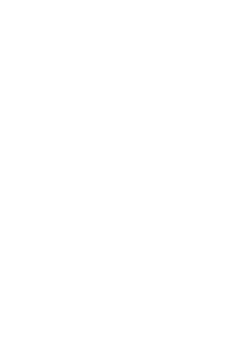
पर भी कहानी को अच्छा बना सकती हैं। इतना अवस्य ब्यान रखना होगा कि कठानी केवल मनोरजन का मध्यन नहीं है। उसने पाठक को कुछ सीच भी देनी है। परन्तु यदि हमने कहानी में ही शिक्षा देना प्रारम कर दियां 💵 यह पाठक को उबाने वान्दी हो बायगी। अत. इस ध्येय की पूर्ति अपन्यभ

और चान्यंपूर्ण अय से ही होनी चाहिये । अन्त भी कहानी का ऐसा हो जिसे पहकर पाठक के सन में एक अनुनित

बनी रहे और यह अधिक कहानी पढ़ने का इच्छक अनता जाय । क्ट्रानी फट्टने के दन के दिस्टकोण ने देनों तो इसे दो हमा में राता जा सरता है। एक तो प्रथम पुरुष में और दूसरे अन्य पुरुष में । पहिने प्रकार की

कहानी में उन्हीं के बीच का कोई पात्र आप बीखी मुनाना चलता है। प० मीना-राम जी चतुर्देश की कहानी "में क्स जा रहा हूँ" इसी अणी की है। दूसरे प्रकार की कहानियों में निगक एक तटक्ष्य व्यक्ति के समान दूसरी पर घटने बाली बदरायें देता चलता है। दोनां ही दय सन्दर है। चन्र लेगक जिन मार्ग को भी अपनाने कहानी के बताने हुए नियमों को पृथ्टिकीय में रखना इ.बा.उमे सुत्रोव और रोचक बना मस्त्रा है। कहानियाँ किनने प्रकार की हो सकती है यह बतलाने के लिए पर्यान

ममय और स्थान की आवश्यकता है। हमारे मामाजिक क्षया वैयन्तिक जीवन का उटाने के लिये निवनी बातें आवश्यक है उत्तरे ही प्रकार की कहानियाँ भी हो मकती है । मित्र भित्र दहिएकोण रखने के कारण सभी कहानी लेशक निम्न मार्ग का अनुसरण करने है। कुछ आदर्शवादी है उनका विचार है कि हमारे सामने एक ईवा जादते हाता बाहिय जिसे दलते हुये हुम उगरी प्राप्ति ह रिय जाग वर्षण म प्रवस्त्रशोध्य हो सर्थ । श्री बस्दाबनकान्द्र वसी की काराजा दक्ती प्रकार *का छ । प्रमाणकादी गया मामाजन है* कि जा**ह गु**क समाज को सिनी हड़ दला का प्रयास क्लावन प्रभावात्साहरू दूस से पाटक र मामन ने पना जात्र क्षण असर असर असर राज साहसी हो



आत्माराम

भी प्रेमचन्द

हेरों बाल में नहारेज मुनार एक मुक्तियान आरमी या सह स्थाने तायवान में प्राप्त ने कथात एक आहीत के तामने बैठा हुआ है तर दिना कराना था। यह कथानार व्यक्ति मुनने के तोना रानने अधान से वे कि प्रज किसी कराय में बढ़ कब्द हो जानी तो जात परता या कि हैं बीज सायव हो गई है। यह निराय प्रति एक बार प्राप्त काल अपने ती

बाज ताथब हा पह है। वह निष्य प्रात एक बाद प्रात्त का ज्यान का का पिता किये कोई जजन नाता हुंजा नाव्यत में बोद वानी था। उ धूषके प्रदा्त में उनका जजेंद कारीद, दोराका सूंद और भुत्ती हुई कार दें कर किती अर्थातिका मनुष्य का उपके दिशाय होने का भन हो मन्त्रा पा गर्भो ही भोगों के काना में आवाद आशी—"भत्त गुक्त विवास सांध

लोग समस्य आने कि भोर हो यया । महादेव का पारिकारिक दीवन मृत्यस्य न या 1 उपके तीन पुत्र ये तीन बहुवें थीं, दर्मना नाठी पोन थे। लेकिन उसके बोभ को हलका कर

बाला कीई न था। न्यांक्र बहुने जब तक दारा जीने हैं हम जीवन का जागर ओन नं, दिर ता बहु बोल यांच पड़ेया ही। क्षेत्रारे महादेव को कभी वर्भ निराहर ही रहुना पड़ना। आजन के समय उपके पर में साथवाद र एया मतन नदी निर्वाण होता है बहु मुला है? उठ आता और नीरियन र हुएंबर दीना हुना मा जाता। प्रसार व्यवस्थादिक सेंबर और भी ज्यानि

हारक वो । वर्षात वह जान काम य निकुष वर उगकी नदरहे और ब बहा ज्यारन वोद्युक्तक जान ज्यारी जानार्षिक विद्याद करी ज्यार करमान्य उप क्योर जा जाज के जीन पद दाव दाहका है जो जात जानार्षिक उप प्राप्त का जानार्थका जाता जीम जानार्थिक जानार्थिक जानार्थिक जानार्थिक जानार्थिक जानार्थिक जानार्थिक नुस्न सुना करना । ज्यां ही बच्ह-सारन होती अपने तारे की ओर टप्यकर पुनार उपना—"सम ग्रहम सिवहम दाना" हम मन्त्र के जपने ही उसके चिम को पूर्व सार्गन प्राप्त हो जारी थी ।

1:1

एक दिन मध्येषया किसी लटके न पिकड का द्वार स्थान दिया ।
भाग उट गया। सहादक ने का सिन प्रदान गेयबंदे की बान देखा ना उसका
के प्रवा सम्बद्धा के उसका थिए पिकड़े की कोन देखा नीता गायक था।
महादक प्रकारक एटा और देखर उधन स्थाने थे पर जिलाह दोगाने लगा।
पन समार से काई बर्ग्यू प्यारी या ना यूरी नाला सा । लटके नाली, नाली
पाती ने उनका की कर चुका था। स्थानने की कुन्यून से उनके काम स विकार प्रकार था। या ना त्या प्रसान था। इसिन्य कि उनके काम स विकार प्रकार था। या ना त्या प्रसान था। इसिन्य कि उनके काम स व्यान आनं उपयोग्या कु हुए। ना ना किसन हुन बाना प्रकार था। प्रवानिया था। से बिद्ध था। इसिन्य के नाला कि व उनका अगादी से जाग निकार ने जाने पर से सेवी प्रसास की नाला हुए उसकी निमा आधार था।

ন্ধাৰ বহুটোৰ বছ এটা আটা অনুযোৱাৰ ইয়ে এটা আনাই নিয়া এটা ধৰী হিছেছেই কুটা নাম কৰা আটা আটা কৰা ইছিল নিয়া বছ আটা চালিক বাবে আটা কৰা কুটাই কুটাই আটাই কুটাই কুটাই

महादेव फिर बाली पिंबडा लिये मेडक की मौति उनकता हुआ चला। बाग में पहुँचा तो पैर के तलुओं से आग निकल रही थी, मिर चरकर श

\$3

रहा था। जब जरा सावधान हुआ तो फिर पिनडा तठाकर कहने लगा---"सल गुरदल शिवदल दाना।" वोता फुनवी मे उतर कर नीचे एक हाल पर बैठ गया, फिल्लू महादेव की ओर सद्यक नेत्रों में ताकता रहा। महादेव पित्रहा छोडकर एक पेट ती आड में हो रहा। तीने में चारो और देखा और फिर जाकर पिजड़े के ऊपर वामन लिया । महादेव का हृदय उछलने लगा। यह धीरे धीरे पिजडे के नमीव आया और रूपका कि सीने की पकड लें, किन्तु तोला हाय न आया, किर पंड पर जा बैठा। मांक तक वही हाल रहा । तीना कभी दशर, कभी उधर उडना. कभी अपने धीने की ध्याफी तो कभी भीतन को देखना और उड़ जाना।

बुहुद्रा अगर मृतिमान मोह था, तो तोता मृतिमधी भागा । शाम हो गई और माया मोह का सम्राम अन्यकार में विलीत हो यया । [1]

रात हो नई । चारो ओर निवित्र अध्यकार छा बया । तोता न जाने थनो में कहाँ जिया बैठा या । महादेव जानना या कि रात में तीता कही बहरूर नहीं जा सकता और न पिनहें में ही था सकता है, तिस पर भी बढ़ उस जगह में हिलने का नाम न लेना था। आब उसने दिन भर कुछ नहीं

थाया, रात के भोजन का भी समय निकल गया । पानी तक उसने न सूत्री दा। परम्युक्षाज्ञ न तो उसे भन्य थी और संध्यास । तोले के जिसाउने अपना बीचन निम्मार अध्य और मना जान पहला था । बहु दिन-रात

काम करता था इसरिय कि यह उसकी अन्त धरणा थी। यह बीवन के

और नाम ने या जा, क्लॉन यह उत्तरी शांदन थी। एवं नामी ≅ंड अपने मंद्रांक्षी ना उद्योगन जा मान न होता था। शांता ही नहें चरहें भी नी इन ज्याना चनना ना स्मरण दिवादा था। इतना होच से जाता जाम ना दर्भर का नहें का ना था।

महार्थित वह का कृता ज्याम जनामीय रहे कर बढ़ी बचा मार्थियो १८ १८ था, किन्तु एण मार्थित घोत पर जाल द्यार एता जार वर्षियाक जन्मका कर्मका प्राचन मुनाई जेतालने धल सुरद्रण विवदण वर्षा भी

आर्थ को क मुख्य को का । का मा महे मोहे काहे पास के पास में दे को है एवं हुंसर मून का नाम एवं कुंदिन साम के कहा है और माद माद में की हम क्षार का है जा का नहीं क्रम कर राज के उन्तान में समान में हर म कि देन का मात्र के कि का नाही को मात्र के प्रथम पान में पार के कि दे मात्र के का का कि का कि का मात्र के का मात्र के मात्र के मात्र की मात्र की मात्र की की मात्र है का मात्र के का मात्र की मात्र मात्र की मात्र की मात्र की मात्र मात्र की मात्र मात्र की मात्र मात्र मात्र की मात्र मात्र

पनाक ज़ा प्यान जा गया, य नव भार हो। यह बार से १५० मधा--"नार, चार, यन हो।! "- चाना न पाठ फिरकर भी न देखा।।

महादय दाया । पान नया ता उन एक बन्धा रंगा हुना निता । रह भीर र न बह श हो रहा था । महादेव बा हुदय उठका द्या । उत्तर र जैन में हान दाना ता महिर भी । उत्तरे एक महिर बाहर निवतला और स्पर्क में उन्तर में देवा ही महिर हो भी । उनने नुश्यत बन्धा दहाया स्पर्क जना दिया जार पर च नाच क्रियर में देव रहा । यह साथु से चार बन गया

बाई—

उसे फिर मन्देह हुआ कि कही फिर चोर लीट न आयें और अकेला पारर मुक्तें मोहरें छीन कें। उसने कुछ मोहरें कमर में बांध की और फिर एक नुली अकडी से जमीन की मिट्टी हटाकर कई गडडे बनाये और उसे मोहरॉ से भरकर मिड़ी ने दक दिया।

[<] महादेव के अन्त. नेत्रों के भामने अब एक दूसरा ही जमन् था। जिलाओं और फल्पनाओं से परिपूर्ण । संबंधि अभी इस कीय के हाथ से निकल जाने का

भय या मगर अभिकाषाओं ने अपना काम आरंभ कर दिया था। एक पत्का मकान बन गया, सराफे की एक बढ़िया दुकान खुल गई और निम मबभियों ने फिर नाता जुड़ गया। जब विलास की सामप्रियाँ एकतित ही नई तो तीर्थ-यात्रा पर चले और लौटकर बडे समारोह से यह और हहा भाव हुआ । इसके परचात एक मिनालय और एक कुँआ बन गया, उद्यान और उसमें कथा पुरान का आयोजन भी हो गया। सायु-मत्कार भी होने लगा। अकरमात उने स्थान आया, वही चौर आ जीव तो में भागूंगा केने ? उसने परीक्षा करने के लिए कलमा उद्यास और दो सी पए मुक्त बेतहास भागा थला समा। जान पड़ता था उसके पैरो में पर लग गये हैं। बिना धान्त हो गई। इन्हीं बल्यनाओं में रात स्वतीत हो गई। ऊषा का आपका

मत गुरुदन शिवदन दाना । राम क बरण में जिल्ल लागा ।" यह बाल मदेव सहादव की जिल्ला पर रहना था। दिल में सहस्रों ही बार म सभ्द उसके मध्य में निकारते ये पर उनका शासिक भाव उसके अन्त-

हजा, हवा जानी, चिडियां गाने करी। सहसा महादेव के नानो में भावात

काण की स्पन्न करना था। अस किसाबाद संशय निकल**ना है, उम्रो** प्रकार हमके महास प्रवाहण प्रकार के निरुष्ट और प्रभाव शुल्पी। दब उन्नहा हुदबस्पी वृक्ष पत्र पन्तव विद्वित या । यह निर्मत बावू उने पुवारित न बर पत्रको यो । पर अब उन्नवृक्ष में बोपलें और शासाबे निरून वापी यो । इस बाय्-जबाह ने बह सून उठा, पूंब उठा ।

अस्पोदय का नमय था। प्रकृति एक अनुरायमय प्रकार में कृती हुई थी। उनी नमय तीना यमें को र्लनावे हुए देंची डाली ने उत्तरा किने आकार में कोई नारा हुई, और आकर निवडे में केंड प्या। महादेव प्रकृत्तित होकर दीवा और निवडे को उड़ाकर वोला। आओ आत्माराल, तुमले करूट तो यहुंक दिया, पर मेरा बोवल भी सहल कर दिया। जब तुमहे चंदी के पिबडे में मूर्या और मीले ने यह कुंया। उनके रोग मोम ने परवात्मा के मुमानु-पांड की प्यति निकलने तथी। अन्तु तुम विजने दमाबात हो। यह तुम्हान वर्डीन वाल्यन है, नहीं तो मुख कैमा पारी पिडड प्रायो कब दम कुरा के मीम पा । इस पांडम प्रायो में उनकी आत्मा विजुत्त हो पाँ, यह अनु-रक्त होकर बोल उड़ा----

"मन मुश्यत शिवशन शाता । याम के बरण में बिन मारा ।" उनने एक हाम में पित्रका संशक्तमा बरण में बनाशा श्वास और मर आया ।

[-]

महारेब पर पहुंचा तो अभी हुछ अंबेरा था । सन्ते में एक हुन के विस्तार और किसी में भेट न हुई और हुनों को मोहरों से भेच नहीं होता व स्वति क्यमें की एक नाथ में होता था और उसे की लोगे ने अपनी नाइ दिंग कर अपनी का अपनी का उसे कि लाग में यह मीच हिस्सी की का अपनी का उसे आपा है है जिस लाग का उसे पर अपनी के अपनी के अपनी के अपनी के अपनी के अपनी की अपनी की अपनी की अपनी का अपनी का अपनी की अपनी की अपनी की अपनी का अपनी का अपनी की अपनी की अपनी की अपनी की अपनी की अपनी की अपनी का अपनी का अपनी की अपनी

न मुँह फेर लिया , यह अमगल मृति कहाँ ने आ पहुँची, मालुम नही आज दिन भर दाना भी नयस्मर होगा या नहीं । इस्ट होकर पृष्टा—"क्या है जी रे क्या कहते हो, जानते नहीं कि हम इस बेला पूजा पर रहते हूँ 🥍

महादेव ने कहा-"महाराज । आज नेरे यहाँ स्वानारायण की

क्या है।"

पुरोहित जो विस्मित हो गये, कानी पर विश्वास न हुआ। महादर् के घर क्या होना उननी असाधारण घटना थी, जिननी अपने घर से किनी भिलारी के लिये कुछ निवासका ।

प्रधा—"आज बया है ?"

महादेव बोला---"कुछ नहीं, ऐसी ही इच्छा हुई कि आज् नगगर् की कथा मुन *न*ृं।"

त्रभात ही से तैयारी होनें लगी। चेदों और अन्य निरुटवर्नी गानों ने मुपारी फिरी । कथा के उपरान्त भीव का भी स्थोता था । जो नुतड़ा, आरपर्यं करना । यह भाज रेन में दब कैने जमी ।

मध्या समय जब नब स्टोग जमा हो यथे, पण्डिन की अपने सिहासन पर विराजमान हुये, तो महादेव सदा होकर उच्च स्वर से बोला---"भाइयो, मेरी मारी उमर छल कपट में कट गई। मेने न आने किनने आदमियो हो दगा दिया, कितने करे को बोटा किया, पर अब भगवान ने मुफ्रपर दया की है, मेरे मुंह के कालिया को मिटा देवा चाहते हैं। मैं सभी भाइयों से नम्रता-पूर्वक बहुता हूँ कि जिसका मेरे जिस्स जी कुछ आता हो, जिसकी जमा मेर मार ही हो, जिसके बोले माल का खाटा कर दिया हो, वह आकर अपनी एक एक कौडी चुका के, अगर कोई यहाँ न आ सका हो तो जाप लोग उससे जाकर कृत दीजिये कर संगक साल तक जब जो चाल आज और अपना हिसाब भनता कर र । सवाही साशी का कोट काम नहां। सब लोगसप्राटे में आर्था कार्रमामिक भाव संसिक्ता कर कोला — "इस कहते स

्रा विकास क्रिक्ट इस का बाहा । देवर के ब्राह्म देवर है के स्वाप्त है के उस स्वाप्त के स्वाप्त है के उस स्वाप्त कर्माहरू के स्वाप्त है

राष्ट्रणास्त्रम् । ११ १ सम् । अत्र ११ १८ सम्बद्धाः स्टब्स्स्यः स्टब्स्सः । स्थापः स्टब्स्स्यः स्टब्स्सः । १५ स्टब्स्सः ११ १६ स्टब्स्सः

T NEWS WELL STREET

म राज्य स्थाप दिल्क । कोट जेंगर बार्ड स्थाप तुर्द र पड़ हिल्म ल है। महाराम केंग्री र पहलार : जिल्लाम है साथ तुर्द र पड़ हैन कर र मराज्य

14.1, 1 1/2 to 1

કે, ક્લાઇ લુક્ત કાલાવાલ પ્રાથમિક કિલ્લો કહીં જુરાં, જાહેલ દ્રાહ્ય કરત હશે :

perfect which is provided in the destroy of the destroy of the action of

त्यां की के देनी पेट कि प्रान्धी की ही भई के दिन भेड़ी पहले भर्ट जे भर्मकों के पुरार्थ के कर के जो जा बहरी हुन्छे के पन्ने बहर देने जुन्हें भर्ट की अपना कि है है है है के प्रार्थ के अपने दिसाने जुन्हें अपने हैं है कैसी जो जो जा कर है के उनके के अध्यान के जा बहर देन देन्द्री इनके पीछे तोर्ववादा करने चला बार्जना । जाप नव साइयां से मेरी विनदी है कि आप सब मेरा उद्धार करें ।"

एक माह तक महादेव केनदाय के राह देवना रहा । राज म वहें बोरा क भव में मीद न वाजी। अब वह की के काम न करता। प्राप्त का बहरा में खरा। सामू क्यालाव को हार पर जा बाते जनका यवाजीय सकता करता। हुए दूर तक उत्तरा खुव्य केल नवा। वहीं तक कि महीना पूरा है। याम कोर एक जावती को अपना हिमान बुक्ताने न बाना। अब महादेव का साल हुआ नमार में कितना वरुप्यवहार है। अब वहें माहन हथा कि महाद बरों के किने बुरा है पर बच्चा के लिये अपना है।

इस परना को हुये पथान वर्ष बोल वुके हैं। आप बेरो बाइन ना हुए ही में मुद्देश नरूस दिखाई देश है। यह अपूर बाद ना वनल है। उनाम मिला हुआ एन पक्त तालाब है सियमें मुद्द करत रिफ्ट रहू हैं। दवारें पहाँच्या कोई नहीं पक्रणा। सालाब के बिनार एक बिसास सर्वाध है। यही अगलायम का स्मूर्ण निन्त है। उनके सबस्य म विभिन्न दिख परियो प्रमण्डित है। नाई नहीं है, उचना रुक्त देखा स्वाध क्या के पला तथा, डाई कहा। है, उचना रुक्त देखा हो क्या का के पला तथा, डाई कहा। है, उचना रुक्त देखा हो अपना हो हथा। पर यथान यह है कि यह नाई कहा कुट का निर्मा देखां करों गई न स्वास का अपने होंगे हैं, आधी गण नो अधी तक सामान के रिनार सामान आपे हैं—

"मन मृण्यन सिवदन दाता ।

राम के चरन में निश शामा ।"

सहारत के निषय में भी निश्तों ही बन भूगियों है। उनन क्षत्रों सान्य वह कि आन्यारात के स्वाधिक होने के बाद बहु कई सम्बद्धियों के साब हिमान्य कर पर्वे बाद वहाँ से स्टेटकर न आयं। उनका नाम आप्या-राम प्रान्त हो नया !!

विद्या<u>च</u>्चाचा

they been up to the decision to

The second of th

A BARAL A ARBA BARA BARA BARAN MANANA BARANA MENUNTUK BARAN BARAN MANANA BARANA BARANA

पांच को पर चीन्य जाना बाला हैन्छ प्रत्ये सं रे ' क्षा अपन राज्य तर्थ उन्तर धर जर में इन्ह्रेयन नहीं । इस बस्का की

का राष्ट्रपा हुन का वक दह वन चर्क मिली रही । जन्म में दानी बन्धी का बनाकर फडल्ट (१६८ - वर ६५) सूच्यू में सिन्धीन पुस्त हैं हत्त में दिन ٠

A & CONT. OF THE A COUNTY ROOM IN NOTE IN 1" • १७ मी बाजन नजा-- ६ रना महन्तर हेला है संबंध है में से साहा है

LANTER IT 404 OF CALL & Ag Troop & 1 art oft and call. र्रोहरी कान काम ने जन मई तीवर फूली उस इस बरा मा बाब नर the seast a man of silven !

[+]

3 4, 8 6,500

नवर तम है दी हो प्रशास्त्र के प्रशास कर है। वी के के बाब की समानाह 医表上腺素 化光光学 化乳化硫酸 聖書 有大詞 医长线 者 有名为母 新 22 47年

I APPEAR OF THE PERSON OF THE PART OF THE PART OF THE PERSON PART OF T को त्या अर्थ के का कार्य के कार्य के कि कार्य के कि कार्य के कि कार्य के कि कि कार्य के कि कार्य के कि कार्य के 148 6

THE A 3-4 TOURS HART & REPORT OF A PER AND THE HEET

्रिति को काकार प्रकार पुन्न करणाच्छा पूर्ण प्रकार का सहस्रों का " के बहुत होता है पर भए है बह रहिते हत्ताह " ₹ ₹

कोंट देश देशों कहात कर बुक्कोंबाने हो बच्चों होते । कोंट देश स्वर री रहेड रही है एका बाद नहुन कर नहीं रहा कर देखें हो स्तरे का क्षेत्र का

रेहिंगों के भी कुनाते का रह तक जुला। कुनार ही उसे जिसके कार्य कर नेवार में अपने अपने बार हो बार कहा के निवासी कारण की

को बहर प्रवाहर हिंचने बच्छा था । रहे देवत करते एके तेवत बाद है एक गई। क्षेत्रीं के बार एक

हिम्मेरिक को कुणकों को जुड़ कुछ के लिये के हुई। स्टर बार्ट कह वित्र क्षेत्र कार्य के कार्य के बाद पहला है एक में मुंकहे त्रकार

विकास का एक वक्तार एक प्राप्त है। उसी कार को देखे दे दरकार के काकर कुरनोयाने से बोरी-क्यों करें, बिन उत्तर

्रिक्त को है की बारी के तेवर बारी है कियी का बुक्त कर में है हैं है विका की पूरणे हैं दें तो होकर बाक अहें से अब बाह से हैं हर बन्ते के मुख्य के पहुंचा । एक स्वर ने एवं क्षेत्र होना

والمعالمة والمعالمة والمعالمة والمعالمة المعالمة والمعالمة والمعالمة المعالمة المعال والمراجع المواجعة المراجعة الم ति । इद्यों का बार हो है । बीर है भी की राज एक ही बही हुई।

The state of the state of the e mangrape some and a some first taken a

'क्या का अपार वास्ट साना वार्ग में मन्त्रका दिये । मन-वी मन रूप्त चन - प्रमाहण है । इस वो सबका इनी नाप साहै, पर प्राटी वरतार वचा वर माह रहा है। विश् बारू-"बुध साधा जी भूठ वालने को कार के भी के राहराने अवका या वारीन में यह नद्रमान का परन ## 610 418 19 BF

बर एक एर एक वर्ष वर्ष वर्ष के की क्षेत्र के बाहा-"का का प्राप्त पूर्व के बच्च है है है है है में भाग भी आयश बचा है है यह ता बार को को यह बट है है जो E'm in vere in a bija de seran ara era in ar ar arak arak मनन १ वे १७ इक्लबार मुन्हे पुर रहा है। जाप न वह कार को दिश्यास करका राज्य संब होत्र के वर्ष स्था राज्य वाम वर ही पैस है। बाप बार के बर के बुरों कारे हर दर पेया में नारी पर बर के 1 मा है हिंदी एक हुआर करत है की तक जुन्न एक बान पश्च है है

'करर कह भाष- जन्मा तमात (चे भारत वस्त मरा है, जे से # 17 J 4819 SI

का मर्गामको वेक्ट विवेश बाबु विट सहाब के बाहर गाउँ साथ है arms of the second is and a defect with the क्तक काल कहार ने बीर न्रेड करते हैं। यह साम का राग साम्य हर है, न्रेड राजा हा ent in all de ft water bett .

न्द्र र " कन्द्र सुर हर्ष है जुद्र हर्ष के जा बहर जा का हुनु पूर्व है 4 46 41 66 68 8 PT 477 9447 879 44 1 75 47 1 that salt a unge nor unge ... up meint en de f.

10 T T I SHE THE THE R M'AT I

अस्मा ने पंत्र मानि बाते हैं बाबू !हैं किर बाजो । अवहीं बनस्य नित्र कार्योःदुवजी है ? की क्या हुवा वे है पेने कारन हुए । तरहोत बदाताई। जन्मा अब नी हिम्मी की मनी तैमा है। जब ने बुक्के ?

हिंद्यां ना के राम ऐसे नहीं है। अच्छा तुम भी यह जी । अच्छा रंत प्रतार मुख्योकाता किए कार्य बढ एका ।

[3]

आब बरने महान में बंधों हुई संहिती मुस्तीबाते की नासी बाउँ पुन के नहीं। आज भी उनने अनुभव दिया है वस्त्रों के नाम इनने प्यार र्चे काचे करने काचा केसे कामा करिये कभी नहीं आका-किर वह गौदा भी हेना नत्ना वेंबरा है जोर अदकों भी हेन्स मार जान रहता है ? पनव हो बात है जो बेबारा इन तरह मारा नाम हिन्सा है। येंड की कराने नी बोहा ।

को त्रवय मुस्तीयको रा श्रीय स्वर विकट हो हुन्से राजी ह वृत्तरं प्रा-बच्चो को ब्रूकानेबाका, पुरुषेकाका ! फेटियों इसे मुसकर करने जरों बन हो बन-जिस्स होता मोदा है

रनका ? यहन दिनों उठ रोहियों को मुख्योंकाने का यह नेद्ध स्वर और रनको बच्चों के प्रति स्टेंट्रेस्टेस्ट बाउँ बाद बाटी गृहें। बहेने के बहुने असे और बने एके, पर मुख्योंकाना न आया । जिस पारे पारे उनकी سته ست 43

المام المام المعالمة المعالمة

गहच-स\$चय

3.8

देता है ।"

सक्या ।"

वरकर बाजानुवितान्वत केस-रामि मुखा रही यो । इसी समय शेरे में गली में मुनाई पड़ा-"बच्चा को बहुतानेवाला, मिटाई बाला ।"

करा कबरे में बलकर ठतुराओं तो । में उभर कींग जाऊँ, कोई माना ने हैं। जरा हटकर में भी चिक्र की बाब में बेठी रहेगी ! दादी उठकर कमरे में आकर बोली-"ए मिटाई वाले ! इघर आनी

मिठाईबाला निकट भागवा । बोला-"माँ, कितनी मिठाई दूं ? नई उप की मिठाइयों है, रम विरवी, कुछ बुछ मट्टी, बुछ कुछ मीठी और जायके बार। बड़ी देर तक मुंह में टिकती है। जस्दी नहीं मुलती। बम्बे की चाव से साते हैं। इन गुनो के निवा ये खीसी की भी दूर करती है। हैं किननी हूं ? चपटी, गोल और पहलदार गोलियों हैं। पैसे की सोल

दादी बोली-"सोलह तो बहुत रूप होती है। भला पन्नीस गें मिठाईवाला-"नही दादी अधिक नहीं दे सकता। इतनी में कैसे देना हुँ यह अब में आपको बना । और, में अधिक तो न

रोहिणी दादी के पान ही बैठी थी। बोली--"दादी, फिर भी कार्फ सस्ती दें रहा है। बार वैसे की के लो। ये वैसे रहे।" मिटाईवाला भिटाइयां जिनने लगा ।

"ना कार पैसे की दे दो। पचीम न सही बीस ही दो। आरे हाँ! में बढ़ी हुई, मोल भाव ना अब मुक्त ज्यादा करना भी बही आता।" बढ़ते हुए दादी के पापल यह की जरामी सम्बन्धाट भी फट निकासी।

उनके निकट आकर बोजी-"दाधी चुन्नू मुन्नू के लिये मिटाई तेनी हैं।

मिटाईशांत का स्वर परिचित्र था, अट से रोहियो नीचे उत्तर बाँदे इस समय उसके पनि मकान म न व । हो उसकी बुद्धा दादी थी। सहिये विधाना की लीला ! अब कोई नहीं है । दादी, प्राप्त निकारे नहीं निकारे ! इमीलिये उन्ही बच्चो की लोज में निकला हैं । वे सत्र जन्त में होंगे तो यहीं नहीं ! बालिर नहीं न नहीं तो जन्में ही होने । उस नगह रहना तो पुरे

धुलकर सरना । इस नवह सुख-मन्त्रोध के बाव मसँगा । इस तगह के

जीवन में कभी-तभी अपने उन बच्चो की एक भ्रमक शी मित जाती है ऐमा जान पडता है, जैसे वे इन्हीं में उछल ब्यूकर हुंग क्षेत्र रहे हैं। पैसे बी

कभी थोड़े ही हैं। आपकी दया ने पैने तो काकी ह। यो नहीं है, इस तरह उमी को पाजाना है।

रोहिणी ने अब मिठाईवाले की ओर देखा । देखा-- उसकी असि श्रीमश्रो से तर हैं।

इसी समय चुनु मुनु जा गये। शेहिनी में लिपटकर उसका अचल पहड-कर बोने-"अस्मा मिठाई ।"

"मुभ्रम लो"---कह कर तत्काल कावज की वो पृष्टियों में मिटाइय

भरकर मिठाईवाले ने वृत्त मृत्र को दे दी।

रोहिणी ने भीतर ने पैसे फूँक किये।

मिठाई बारे ने पेटी उठाई और नहा-- 'अब इस बार ये पैने न लूंगा।" वादी बोठी-अरे-अरे. न-न. अपने पैमे लिये जा माई।"

किन्दू तब तक आने सुनाई पदा, उसी प्रकार मादक मुद्दुल स्वर में-

"बच्चो को बहलानेशका मिठाईवाला।"



सेट छगामल बुख अप्रसन हो कर बोर्ड—"मेरी दश: इन आर्यानों से कभी नहीं सुबर सकती । ये आधार्वे और विश्वान मूर्फ मीट है पत्र से मही ख़ड़ा सकते।"

मुनीस जी बुढ बहुने को ये, परन्तु मेठ ने उन्हें हाय के इसारे में रीत कर नहां—"मुनीम जी, आप मुखे बहुआने की खेटत मन कीजिये। जब लोहाचार का समय नहीं रहा। मेंने आपको जिस काम के जिये बुलाया है उने मनिये और समस्तिकों!"

मुनीम अ—"मुक्ते जो जाजा हो वह से सर्दन करने के लिए—" सेठ की—"इसके गहने की कोई साक्टपना नहीं। जारको मेरे यहाँ रहते हुए २० वर्ष हो गये है। इनने दिनों में मुक्ते जारके जियम में पूरी जारकारी हानिन हो चुनी है। मुक्ते जिनना विस्ताम आर पर है, कनना चुनी पर भी नहीं।"

मुनीम जी-"वह नव आपकी हपा--"

सेठ जी--"हपा नहीं, सच्ची बात है। जच्छा बरा चुत्रू की युज-बाटये।"

मुनीमनी उठकर बाहुर गये और १० मिनट बाद लीटे। उनके बाप एक नजपुबक था, जिसकी जायु पच्छीन उठवीन वर्ष में कनका यी। मुनीम जी नवा नवसुबक दोनो मेठ जी के पल्टेंग के पास बैठ गये।

मेठ जी बुछ देर जांग बद किये पडे रहे। उत्पन्तान् आंग्रें सीण कर मेल---'बेटा चन्न'

नवयुवक--- हो ' पिना जी ' "

मंठ बी--- मंता अब दाही चार दिन का मेहमान है।"

मनीम बी--- आप भी क्या बात किया करत है। आप अवस्य अन्छ टी जायक। कर राकरर साहब कहत ये कि अभी कार्ड बीत नहीं स्तिक्षी। सार यो ही ऐसी बाउँ मोच सोच कर तबियउ परेगान किया इरते हैं।"

चुरू-"यह साम बमा-"

मेंट जी हाय के इसारे से पुत्र को रोक कर योले--- 'पहिले मेरी सब बारों मुन तो, फिर जो जी चाहे वह लेता। हों, तो यदि में चरा ही बसा तो अपने पीटे तुन्हारे लिए जपने क्यान पर मुनीम जी को छोडता हूँ।"

चुपूमल ने मुख चौर कर मुनीम जी की और देखा। मुनीम जी भी हुए पक्स से गरे।

नेट वी--- 'जो वेतन इन्हें जब दिया जाता है, यह मदैव सिये जाता --- पार्ट में काम करें मान करें। यब कोई बड़ा काम करना जो नुम्हारा कमम्य हुआ न हो तो पहिले मुनीमजी से सलाह ने लेता और जैसा यह करें बैसा ही करना।'

चुम्मत असि छाड पाड कर मुनीम जी की ओर देसते जाने य और पिता यो की बातें मून रहे थे। मुनीम जी चुपकार निर मुकाने बैठे थे।

मेठ जी बुछ देर दम शेकर बीले-- 'बल तुम्हारे सिए मेरी यह अंतिम सामा है। मुख्ये और क्षिती सम्बन्ध में कुछ नही बहना है। तुन स्वयं समम्बारहों; जो जीवत सनम्बन करना।"

मेंट जो में किए कुछ देर दम तिया। तत्तरपात् बोले—'मुनीम बी! जारमें मुम्हें कुछ नहीं कहता। मुम्हें विश्वाम है कि जो स्पवशर बार मेरे नाम करते नहें इसके साथ भी करेंगे। कारम, बार इसे सदेव ही पुत्रवत् सममते रहें हैं।"

मुनीम बी में सेठ वी बी बान का कोई उत्तर न दिया। मेठबी में मुनीमडी की बीर देखा। बुद्ध मुनीम की अस्मि में अस्मित्रों की छोड़ी छोटी बुद्दे निक्स कर उनके मुनियों को हुए गानी पर बह रही थी। बान पहला ह मेटबी का उन्हें हुई के हुए। अपना बान का उनके मिन नवा क्यांति उत्हान कुछ प्रमन्न मूल होकर दूसकी ओर करका करणकी।

[+]

केर भी का बनावता हुए गील महीने बील गरी। मेट जुड़ान कार्य रिया में तमाप्त पूर्व महिले कार्य गारे गरीवार के मारिक हुए । दूरे कुरीस मन्यवार का गाँव बाद करना का मारिक दे थे, उमी प्रसार कार गाँउ स्पूर्ण के मारिक बाद करना कर। या महिले तक भी दूरिया कीर नार नार्यक कर। जारा कारण कर मारिक पुरुष्ण कर कुरीना मी पी के बारण नार्यक कर। असरा बारण कर मारिक पुरुष्ण मारिक प्रदेश की ब बारण नार्यक कर। असरा बारण कर मारिक पुरुष्ण मारिक विश्व कर कार्यों भी नाम के रिया ने बार मारिक पुरुष्ण मारिक विश्व कर महिला कीर भी नाम के रिया ने बार मारिक वा असरा महिला मुख्य कर महिला कीर की कार्यक कर मारिक मारिक मारिक मारिक मारिक मारिक मारिक मारिक कीर रिया नार्य के पुरुष्ण कर नार्या कर। आस्त मुख्य कर कीर मारिक मारिक कीर रिया नार्यक कर मारिक मारिक मारिक मारिक मारिक मारिक मारिक मारिक कि नार्यक मारिक कीरण बाहर समस्य कारण और कुरू कुरा मारिक मारिक मारिक कि नार साथकारण मारिक मीरिक मीरिक मारिक मेरिक के असराव के मारिक मीरिक मी

नेक दिन नृत्याक व बाल नृत्य किया के नाम बाहन कुनते नामे की मेरे अमें दिना क्या नाम का वहा मात्र को कियोगती में हमान्यांचित नेमा मात्र का नाम दिन की है का एक्टरनीम दिन कुनते का किया का मात्र के मात्र के किया मात्र हुंद्र हामा हा जब पर नाहर नृत्य देननी महिल नहीं दिनार बाम कि का जब कर नहीं , नीकर के मार्ग्य इनना बहुद नाम होता है. ্সাধ্যমান্তি মুট্টিলয়াত কর্মাত ও জন্ম সীক্ষর ক্রিয়া চন্মা ক্রতাত্ত আলিজ্য ও উল্লেখ্য মুট্টা মুদ্ধি হা ইতিকাম সিহার

्यांतरा १९५८ - यह राष्ट्र एक वर्षात्म स्वाध व्यवस्था व स्वेक्ष्य स्वा रणा काल्या है अहेत्र के स्वाद करणाता अहेत् कर वर्षात्म व्यवसार्य कर्णा रणा सहाराज्य वर्षात्म व व्यवसार के व्यवसारण वर्षात्म व्यवसार्य है है

marters wer the direction of gradies with the distal direct to be

न्ते । देशांता अन्यवास्त्रां शाः शाः । - शर्मा वात्रम् ५ (स्त त्राप्त आग्न्य अद्युग्ने समय अद्युग्ने त्राप्त !त्राम् विद्यात्वासम्बद्धाः अन्यकाः वा आवस्य स्वत्रां वित्तन्त

लिया बार्ट पर प्राप्त तर बार हो । वा २ १ हा । - भूग बार बार (६ पर १४) पर स्थापन हो १ वार बुद रहे हह बहरद हार, हान र मारा कोणा हो रहादार ।

पार्ति देश देशका स आयात्र हास पर गास का बुधसार स क्षान्य

मार्च के पर्वार श्रीता तथा शारा के साथ साह क्षा रावाय है।

्राव (शिव की गा— भेदी ?

े भेतुमा — मुनीय श्री का १ ह— दश समय काम अधिक है, सरा पना ठाक नहा है!

तः दश्यः नहाः ।" - इत्तरा----'अति हुम यस बुद्ध सुनद की काम म आ गर्थे ?" —

चुम् --- विकास के अधिक बुध बेलता है ता वे अध्यस्य होते हु।' परिणा---- अध्यस्य तान कता हात दा। यह त बोत ने मोतन तो परिणाता है।

दूमरा—"बात सच्ची तो यह है कि बहने को तो तुम स्वाज हो मये। पर अब भी उनने ही परनन्य हो जिनने बडे सेठ जी के ममय में में। नुम कुछ बबुबा तो हो नहीं, जो अपना बनना विगडना न समभी।"

तीमरा—"बरे बार बृड्बा बड़ा चलना पुरवा है। वह चार्ता है कि तुम उगरी मुर्टी में रहो; विनना पानी गिलाये उनना ही पियो ।"

पहिला-"गवधुव तुन्हारे लिए यह बड़ी लग्बा की बात है।"

इस प्रकार सबने मिल कर कुशुमल को ऐसा अंग पर कहाया रि छाष्ट्रोने यह दान की कि चाहे जो कुछ हो वरन्यु अब यूनाम जी के मामन में न रहेगा।

ूनरे जिन चुन्नुमल नवेर जिन्नो के साथ जाने की तैयारी करने लगे। मूनीम जी की जब पना लगा तो बडे कुण्टिन हुए और चुन्नु से मेरिन---"आलिर आराने मेरा बहा न माना और अले की सैवारी कर ही दी।"

मृत्यूनण एक तो त्या ही मुनीमती में तम आ यसे में, हुगरे जिसे ते मी वर्जे कुम मत था। मह मुनीम भी मा निम्मान माने से निये तैयार देरे से अन्यून हुट्ने ठी मोरे—"बार होने मीन है जो आराव महाने बातूँ में तो पंचण हाणिल कि बात पुराने हे और विचा भी भी मार्ग मन्तर-मान्त्र होने से निल्य कह निये से सावत प्रत्य करता हुं भीर साव निर पर पड नाने हैं। नवा साव बाहने हैं हि में गोलड साने सावते हैं। बढ़े

मुनीस जी इस देशर के लिए सैपार स बे। बड़ खुमूस के मुंह से---उस खुमू क मुंड स जिम असीन बोद से बिन्ताया था, जिसे उन्होंने सिया-पदा वर व्यासार बन्ता थ दश विवा वा---यह उत्तर सन वर स्त्रीसिट रह

गम । स्वान स मा उन्हें देश होता है श्री शास न थी । बहा देर तक बह नह सहसह स स्वस्थ का सेह ताकत नह होरे यह

मोचन रर कि अरव वर देन आ एक विश्वका करना आह से पुनका

रित ह्या बरमा बा। अन को बुता को भाग बन सम्भावन में बोरों—'बीर ! आर पाते की रामभे और मेरी बारों का पाते को अबे राजाये, परस्तु में जय नव दाते हैं जिसे अनुवित सम्भीता उस बास के लिए माँब डोवड़ा सोता। मुमसे यह मही हो सकता कि चारों बने या रिताई, में कुरबार बैदा-पीता हेसा करों।'

बुगुप्रण राम्भीतम् भे दोगे -- 'यदि आपमे ग्री देशर जाना को आप राप्ते भए वैदेश'

चुमूनण मुनीम और की का बात के मन ही मन प्रयोग हुए। समस्य---चारी प्रचार हुआ, आंस सुद्धी और गर्दे।

[:]

मुनेम दो में बुधुमान में यहाँ आमान्याता बार नाए दिया। कुछ सीरों में यो बुधुमान और मुनीम यो में में में मुमीबन्दान में मुनीम यो में में में मुमीबन्दान में मुनीम यो ने समझान कि जाते मीतिमें असा करते का मान्या मीतिमें असा करते का मान्या मीतिमें असा करते मान्या में में मान्या मान्या मीतिमें असा करते मान्या में में मान्या मान्या मीतिमें असा मान्या माया मान्या माया मान्या मान्या मान्या माया माया माया मा

38

लोगो ने चुन्न को भी बहुत समभाया बुभाया कि तुम अपने दुर्व्यवहार के लिए मनीम जी में क्षमा माँगो और उन्हें मना-मृत् कर राजी करी। परन्तु समभाने वालो की अपेक्षा भडकाने बाले अधिक थे। अनए व

चुप्रमात ने इस बान पर कुछ ब्यान न दिया। उन्होंने केवल इतना हिया कि मुनीम जी को पेंशन के लौर पर कुछ बासिक देना चाहा परन्त्र मुनीम में न एक पैसा तक लेगा स्वीकार न किया। उन्होंने कह दिया-"में कभी च्छ्रमण का नौकर नहीं रहा। जिसका नौकर था उनका था। में चुनुस्य का पैसा भी नहीं ले सबका।" इस प्रकार चुनुसल यर जो चौका बहुत अबूबा या वह भी दूर हो गया। स्वतंत्र होते से विकासप्रिय मुख्य के लार्च बढ गये। उन्होंने साने कारोबार पर भी उचित ध्यान देना छोड दिया। सब काम प्राय: नीर री ही के भरोने पर होने लगा । मात-बेड साठ इसी प्रकार काम चला ! उरहे कारबार की इमारण बहुन बड़ी भी और नीव क्याबोर हो गई भी । समय के नक में उलट-कर करके स्थिति का इस बदल दिया : चन्नमल की सागरवाही अन्त में वह दिन लेही आई जिनमें सेंड छनामल का पर्न हममगाने संगा।

दो लाख की एक हुन्ही का असतान बा । चुन्नुमल को अनका स्मरण ही न मा और न उनके नौकरो और स्तीओं ने ही उस पर कुछ ध्यान दिया। बिन समय आदमी हरडी लेवर दवाल पर आया और मगान मौती उम समय बुजूमल की अलिं लुजी। उस समय उनके पास केवल पवास हजार रुपये नैपार थे। इससे सन्देह नहीं कि यदि उन्हें पहिले सुएतान का ध्यान हाता तो दो लाल क्या कार-छ शाल का मयतान भी दिया जा सकता था। परन्तु हो बार दिन पहिले बदा बुद्रमण को एक घटा पहिले तक भी उसकी प्यान न बाया। बढ वर्ष्ट ब्रुश्यान नुगन्त नहीं दिया बाता तो पूर्व दिया-रिया ह्या प्राप्ता है। यह एक गयी बात की जिसस क्षणमध्य जैसे सापरवाह का भी करता 'प्रत्यापा उत्तव जाय पेर पर सब अस्था सुरु अधिहा





मटरूमल बोले--"मई, जरा उँगलियाँ मीधी कर लूँ तो देखूँ। जाडे

के मारे उँगलियां मोधी ही नहीं होती।" कुछ देर बाद दह≨ती हुई जेंगीठी मटस्मल के सामने आई। भटस्मन

कुछ देर तक उसमें हाय सेंकने के बाद बोलें--"हाँ। भई अब लाओ हण्डी देखें। बुदापे में प्रपीर की दुरेंगा हो जाती है। मेरे तो हाम भी लब कपिने छगे।"

यह कह कर उन्होंने हुण्डी हाय में ले थी। उस माली के सामने लाये, हामो के टीक नीचे जेंगोडी थी। बक्स्मान् हाम धर्राने, और हुग्ही हाम में एट भेंगीठी में जा गिरी। जब उक कोगी का ध्यान उपकी ओर जाय-

जाम तब तक वह जल कर राज हो गई।

भूगतान मांत्रने बाले के चेहरे का रय उड़ गया। इसर चुसूमल का

पेहरा मारे प्रसन्नता के जिल उदा। मटरूपल किसी के बोलने के पहिले ही बोल उठे-- "बया कहें, हाप

ऐसे कांचे कि हच्छी संभक्ती ही नहीं। खेर, कोई चिन्ता नही। (भूगतान लेने बाले से) तुम हच्ही की नकन साओ और भुगतान से पाओ। अभी से

आओ, अभी भूगतान मिल जाय।" भगतान सेने बाहा बल-भूत कर बीला-"नकल स्या मेर पान

परी है। । जब मंगाई अगयी तब आवयी। नकल सैगाने में तीन चार दिन लय जायेंगे।"

मटरूमल-"तो माई में इसे स्था करूँ। समय की बात है, हाब कीप गया । बृह्का आडबी टहरा । परन्तु इसमे बया, गुम्हारा भूगतान ही

रह ही न जायगा।" भगतान सेने बाटा बोटा-"भगतान भटा बबा रहेवा, पर तीन बार

दिन का भ्रमेला को का गया।"

मटकमल--- अब तो लग ही गया, क्या किया बाय ?"



श्रागात

श्री वृन्दावन सास बर्मा

रज्जब अपना रोजपार करके लिखितपूर छौट रहा था। साथ में स्त्री थी, और गाँउ में वो-तीन सी की बढ़ी एकम। मार्ग बीहरू या और मुनसान । ललितपुर काकी दूर था, बसेरा कही न कही लेना ही या दर्सालए उसने महपूरा-नामक गाँव में ठहर जाने का निरुवय किया। उसकी पत्नी भी बखार हो आया था। रहम पास में थी और बैलगाडी किराये पर करने में सर्व ज्यादा पहला, इसलिए रज्यब ने उस रात बाराम कर लेना ही टीक समऋ।

परम्त ठहरता नहीं। आत दिवाने से काम नहीं चल सकता मा। उसकी पत्नी नाक और कानों में चौदी की बालियाँ डाले मी, और पैजामा पहले थी। यह उस गांव के वहल से नर्मण्य और अक्संच्य दोर साधीद कर

ा जा चका था।

अपन व्यवहारिया स उसन राग-भर बसे र क रायक स्थान की याधना रा किल्लुटिसीन नामजर न किया। उन रायान अपने द्वार रज्जब की अरंग अरंग और ¹¹¹6 उस अक्षेत्र । असरन स नुसल झा नग**र** नगर **गी** स्वर राज्य दर्भाग सदस दस्यार रार दिया।

भावास प्रवास सहा राज्य प्राप्त स्थान स्थान सा जिसकी

प्रमान अपन हर र अन्तर हरी प्र- क्रू भी भी था। र प्रभाव स्थान अव्यान स्वाधान स्थान भग प्रमाण स्थान स्थान प्रप्

त मार्ग कर किया विद्याप का अरामाभन्त नहर प्राचन पहेला था। चंद्रा र महात ५ व तुं दुसह "विकार राष्ट्र क आदर अपने सन्दे



"हा सरकार!" रज्जन ने उत्तर दिया।

टाकुर बोला-"तब भीतर वा जाओ, और तमास् अपनी जिल्म ने

पी लो। अपनी बौरत को भी भीतर कर छो। हुमारी पौर के कोने ने पडे रहना ।" जब वे दोनो भीतर था गये, ठाकुर ने पूडा--- "तुम कब यहाँ से वर

कर जाओगे?" जवाब मिला-- "बंधेरे में ही महाराज! साने के लिए रोटियां बाँघे हैं, इसलिए पकाने की जरूरत न पहेंगी।"

"तुम्हारा नाम?" (1348 3×

[२]

थोडी देर बाद अकुर न रज्यन से पूछा-- "कहां से आ रहे हो? रञ्जब ने स्थान की नाम बनलाया।

"बहाँ किसलिए गये में ?"

"अपने रोजगार के लिए।" "काम तो तुम्हारा बहुत बुरा है।"

"न्या करूँ पेट के छिए करना पहना है। परमान्या ने जिसके छिए जो

रोजगार मुकरेर विद्या है, वही उनको करना पहता है।" क्या तका हुआ।" प्रस्त करने म जरा ठाकुर का मँकोष हुआ और । ति सा उत्तर हत रक्ताव का उसस बढ़ कर।

रफाव ने जबाब दिया -- सहाराज पर के सामभ कुछ मिल गया है।

ता है। वाकुण न इस पर करड किए नहीं का। रक्त्य पर रण राज्य राज्य — यर शहर एक सर बाह्य बाईसा ।

ाद नक प्रस्वापन का अध्यास अ शा हो आसा।

रसमें बार दिन घर के यह हुए परिन्यानी मी यदे। बादी राह पर्वे हुए छोयों ने एक वर्षे इसारे में टाहुर को जहर बुनाया। एक पर्छा सी स्वार्ट ऑडेट टाहुर बाहुर जिवल जाया।

भाषानुको से म एक न पीर में कहा—' दाक व ! आव तो साक्षी राष तरिट हा' कर मत्स्वा वा सुपन वैद्या है।

टायुर ने क्या— 'बाज बकरने थो। भँड, कल देखा जायगा। क्या गर्द ज्ञास क्या जा।'

ही—"आपन्तुर बोला, एक समाई रपये नी नोट बापे इसी और आया है। परन्तु इस नोच जरा देर में पहुँचे। यह सिसक गया। कल देवेंचे जरा जन्मो।"

. टापुर ने पृथा-मूचक स्वर में बहा—"क्वाई का पैसा न छूपेने।" 'क्यो ?"

"नुरी समाई है।"

"उसरे रचयो पर कसाई थोरे ही दिया है।"

धरमा तो दूसरो का हो है कसाई के हाप में आने से रयमा कसाई नहीं हुआ।"

"मेरा मन नहीं मानता यह अशख है।

हम अपन लहजार म उत्तको शह कर छन्।

प्यादा बहुम नवा हुए। धकुण न साचकार अपने साथियों को बाहर-का बाहर हो राज्य रहता

्मानादस्य ३० । च्यांच्याचीनं भारताकृतंभा

*

तो हलका हो गया या, परन्तु सरीर-भर में पीडा की और वह एक करन भी नहीं यस सकती थी।

टाकुर जसे बही ठहरा हुना देख कर कुपिल हो गया। रजन है बोला—"भेने सून मेहमान इक्ट्डा किए हैं। यांन भर योडी देर में दुम लोगों को मेरी पौर में टिका हुना देख कर तरह तरह की वहनात

करेगा। तुम बाहर बाजो और इसी समय।" रज्य ने बहुन विननी की, किन्तु हाकुर न नाना। यदारि गाँव उसके दबदवे को मानता था, परन्तु बव्यक्त कोकनत का दबदबा उसके मन पर

भी था। इस्रतिए रज्यब गांव के बाहर सपलीक एक पेड के गीचे जा बैठा, और हिन्दू नाम को यन ही यन कोसने क्या।

स्रोर हिन्दू मात्र को मन ही मन कोकने कता। उसे साधा थी। कि पहर-माधी-महर में उडको पत्नी मी दर्शनार इतनी स्वस्त हो जागनी कि वह पंतन साधा कर सहेगी। परन्तु ऐसा न सभा तब उसने एक गाडी किराने पर कर को का निर्णय किया। महिस्स

से एक बमार काफी हिराजा लेकर करिनजुर बाडी से जाने के लिए रासे हुआ। इकने में दोनहर हो गई। उनको क्ली को बोर का बुजार है। जायी। बहु जाई के मार्ट करनार कोर रही के। इक्ती कि राजक की हिम्माड की समय से जाने की न पड़ी। नाडी में अधिक हुआ स्वाने के प्रदे से राज्य में वस्तु क्या एक के लिए माना को स्वीतिक कर दिया, यह यह कि उर्व सेवारी की नम्म के का स्वेत्रकी बन्द न हा जाय।

घटे हेड घटे बाद उसकी क्यांक्षी वन्द हो यहं, परन्तु क्वर बहुत है व मा स्था। राज्यक न न्यांनी पानी का गाडी व डाव्ह दिया और गाडीबान । जाद फलने का कड़ा।

सम्मानम् वाज्यः—- "देश स्थाना प्रदेश प्रशास्त्रा । प्रवासन्दी **पर्सने**

गाक/गाः। राज्यस्य नाम्बरम्म हंन्यर चंगमः सम्यास्य स्थलने का कहा।



"कंस मीन उद्भा? किराया से चुका हूँ। अब फिर कंम मार्थुण! "पैसे आज मीन में हठ करके मीना था। बंटा! तिलापुर होंग यो बतला टेला!"

"क्या क्वला देते ? क्या मेवमेंत बाडी में कैटना चाहुते में ?"

"स्या वे । नया दश्या देकर भी संतर्मेज का बैठना कहता है? बानज है मेरा नाम रज्या है। अगर बीच में यहबड़ करेया तो साले को गएं हरे

में काद कर कही फंक दूंगा और वाडी खेकर लक्षितपुर चल दूंगा।"
रजन कोय को प्रकट नहीं करना चाहना था। परस्पु ग्रायद सहार

ही बहु भक्ती-भांति प्रवट हो यदा । गारीवान ने इपर-उपर देखा। अंघरा हो यया था। वारो और

बुगवान था। आवधात भागे साथे थी, ऐता जान पहता था कही है कीई निकता, और अब निकता। रज्जब की बात युन कर उनकी हुद्दी की गई। ऐता जान पढ़ा मानो पननिमों की उनकी ठंडी छुटी छु रही हैं।

गानियान वृष्णाय वैको को हो को का अब्बा कम दूरा हूं रहा हा। आठ ही गानी कोड़ कर नीचे लगा हो जारूँगा, आठ हो शोचा—"मांड के गोच नामों की मदद से अपना रोका स्टब्स से सुझारुँगा। क्यू रेले अर्थ ही वापस कर दूंगा, और आये न जारूँगा। कही सच्चूच नामें में मार मांचे

[4]

अधिक कटक के साथ मामने रास्त पर सड़ो हुई एक ट्रकड़ो में से कियी के कठीर कठ से निकला—' शवरदार, जो आम बड़ा।"



16

1'ई रर अपर 18 मंदे हैं, में दलता हैं हैं' en groe nich bur grett a auf auf bereit beimuliget eres बत करते ने अन्त हर हरन चुरण्ड करता पैया दिवान कर ब इन ही . तथ्य 'इस । नाम नाम देण अने व्यक्तिन में नाम नीम भरत में बहाना' तीने

हरूप राजा, उच्छ वस बान्स । उन्हर्स और इ सावहर है।" J. 412 act 4 1' eter 4 48 gg abe et ant fentem 4 sortel st set it i ate ton coas at the unit stat." र के कर रूप इस व्यक्ति के स्तुल्ल लंबरहार, वर उन कुरा, गाँव अर्थ को संस्थान है के बेर केर है है । बह बंध बंध मार्थ कारी देर कहा करेंड कहा था गार कर रहे हैं हुए सहिद्या है मार्थ कर ब्राज्य न क्हां-- एक राम क्षान क्षान पर कार्यो। र उन्हेंगर को तम अब करा । एका बाहाराज व बाजानने हो है, होया में र. भ .या । रेकान तक पहुँचा बाला, तक पीटना । नहीं तो बानी केंग नद करोबनी। नीर देव के यो ने के राज्यों ने की करी देव बाद को वर्षी 12 4' II - 15 45 4.4 4 4-55 40 40 40 40 40 11 1 नावदेश के नान्य प्रवण कर गाउँ । इस व नाहे के वह देखा जादनहान मांची To 42 50 1044 电 No 40 经存在的 经 化油 计明 440 电 1850mm CAR MERCHANESCO AND CO. CARAGE CAM ASSESSIBLE REPROBLEM

रुपार राजा-- 'तमा द्या है तान है वर में " बाह बार्! बान पुनारी

1.8 44 1 बात का र अवार्ट बनाई दम कुछ नहीं बान है।" धारना हो प्रथम । " उन्तन कहा---"इस पर हाथ मही प्रमारन मीड a small her wind a

रक्त न करना । बोन्या-- 'इन्फ्रा लाग्या बद्धनान्द्र इस्ट हा है ही !



उत्साह ने अपने इक्लौने बेटे को लिखा पढ़ाकर अपनी भावना का सुगर चारा दिशाओं में फैलाने के लिए, बाहर-वर्ब भेज दिया था। पूर्व ह उन वडी आणा थी। बाह्यण के शुद्ध संस्कार उनको जन्म से मिले थे। बर और म्मृति उसके राउ दिन के साथी बन गये थे । उसमें बृद्धि वी उत्ताह था। बागह-रवस्य लेकर अधमता को पहुँची हुई पृथ्वी का उद्धार करने की ग्राव्स थी, ऐसा उसका पिना मानना या । रियान उस दिस्कित करने के लिए भेजा था। पहले ता उस रिजना

र न के इंड की दमदमाइट डाक के द्वारा जन तक पर्टचनी और उने बहा मनाय क्षता। उसका हृदय प्रकृत्व होता और उसे ऐमा लग्ना हि मन ही जामा करीजन हान का समय जरवंत निवद मा रहा है। वर्म का उद्धार और आर्व नरहति का पुत स्वापन, और बनुक्व ममान और गढ़ तथा नपरनी बाह्मण की थेप्टना, सरल और नशकारी

मभा व और धर्मात्मा नवा त्याची राजा-वे बस्तुर्थ निक्रि के तह पर बन में बर्रों आती दिलावी वहीं । बहु साला बाह्मण बाल मानद में निश्री जाती हुई वधाइया को स्तेत ने वशीकार करने के तिल आकाशापूर्व हरव उलता था। परम्यु बाह ही दिना से आधाननक पुत्र कर समायार जाता है। बार ही महा। बदल के प्रभातकारीन बाहाम की भारत उसके निर्मेण हुइन में शका का सवालन हा बाला, परन्तु 'सरिसवाणि कर्माणि सत्यास्याप्ता-

·मनत्रमां का मृत पहतर यह हृदय को आदशायत देशा । वहा बदा तह बाएड, विदासि बायु की काई मन्द गहर उस अध्निहानी ह बाद न जन्म परन्तु मनन्त्रन बस में उसका खड़ा थी, नारत के बास्त में इंडर्ड किसाम का जाती के उत्पाद और मादन पर उन्ने भरामा की है

बान अस अनद शाहाण बारा है। राणकारी प्रशास के प्रसाद में उन्हरी



उनने गोविन्दराम अस्तिहोत्री के विषय में पाँच गात आदिमर्पो

पुछनांछ की और अन्त में पना चल गया। किसी ने कोठरी दिसला दी तिम पुत्र को यह समें घुरुघर सानना था उसका यह निवास ? एक ओ गोनालयों की पनित थी, दूसरी और कोई खड़ा खड़ा मामने दर्गण टी

होती जी ले गटा ।

4:31

- ins in 1

अनिविचन स्वर में उस हजामन करनेवाले से पुछा---"गोविन्दराम

अभिनहोत्री कहाँ रहना है ?" हनामन करनेवाले ने मुंह विश्वकार निर स्कार के स्वर में ही पूछा--"वयो वया काम है ?" 'मुने सिलना है ।'-- उसके कलेपन से लीभकर बूछ दृश्ता से असि-

कर हवायत कर रहा था।

'उस छोकरे से पूछो'—बहकर वह हतासत करने लगा । अस्मिहोत्रों ने नमरे में बैठे एक ६-७ वर्ष के लडके भी ओर देला। लड़का धरती पर बैटा या उमक मामने एक चाम का प्याला या और उनके हाचो में न या मध्मन न भी राटी हिन्तु गेहुँ भी कुछ जाली-जालीदार-मी चीज की। स्टेशनो पर जीनहोत्री ती ने मुखलमाना को यह पदार्थ बेचते देखा था इसलिए एन बन्द को पहिचान गये। लटका उसकी चाय में इबो-क्वोकर सा रहा था। लडके के मूंह स मेल की गड़ जमी भी और उसकी आंखों में की बड़ या। लड़के में बाड़ी बूरी पर मंली-मुभेजी पांगी पहिले एक स्वी बैटी बैटी बाज काइ रही थी। इसको देखने के बाद अम्निडोकी को समय न रहा। आढ वर्ष पहुन जिल बाताण बच्या के साथ सहके का स्वाह किया या वही शुनार कर रही थी। भारी हृदय से उसने उसने पूछा-"गाविन्दराम

कौत है "---दूसर गाँव की अन्यवस्त्रमा काया वर्षी पहते देखें हुए समर को कंत्र पहचान । सावित्ताम बातर तथा है । वया काम है ?!



नासन मांजनेवाजी साति से दासन मांज रही भी और नस बर हैं। जाने के सारण जूटें हाथ से उस बड़े बर्नन में से पानी से रही थी। एमें ⊞ गर्प स्टार्फ भी बहु पानी उद्याज रहे थे।

ताने नाके भी बह पानी उठान गहे थे। श्रीनदोशी भी विचार करने भी मिल यह गयी। यह बारिम श्रीम और दरबाके गर साम भर नाहा रहा—और विचार करने लगा—गहें गारिकरणना श्रीनदाशी ना यह र श्रीर सही देन यह शाचार र यह गर

नारिक्टरान सर्विन्द्रानी वा चार है और नहीं बहा यह आबार है वह सह नंत्र तहन करे और दश्में निज प्रकार हुए निवाह करें हैं है कि में उठड़ा आजन पर की आर ज्या । कुछे पर की दाज जनजाहै, वह की उड़ी और नंत्री की नंत्री—न हार धोया, न मोजे की योजी पतिहीं और कुरहे के पार साकर वाल उजार आयी । यह देणकर मानिहोंची भी की दुविसा दूर है।

गयी। उन्होंने पनदी निरु पर रणकर पोटनी हाथ में ही। यह अपीपि दलकर उनका निर पूमने कथा ।

'म बाहर हो जाड़, फिर आडेगा। कहफर बहु पक पड़े। अभिहोती बहुर में बाहर निकार। उनकी तीएच आंचो का देव सम्बद्ध हो गया। उनकी रहका बच बाता रहा। उसे स्वस्कात रहा कि में स्वयं कित समार्थ है। उसे नमक म पड़ा कि ऐन मनार स में किमीलए आया। किमी नै

नार्य पूछकर उनमें सबूत की ओर चलना प्रारम्थ किया । सागर देखकर उमके सब को भाग्यता हुई और स्तान-प्रभा करण बहुम्बन्य हुआ। जा लो और लड़का यह देखकर आया या वे स्था मचपूर्य

नहुत्त्वन्य दुवा । जा शी और लड़का बहु देशकर काया या वे बया नवपूर्व ही बार्किन्दराय के वे े दंब बाव केने के अतिन्दित कोई मार्व न था । यहराक्ष पूर्वन बर्गा और देखा । याजने बाहि हुन वर सकर के बन्दिर के नवस्पुर्की जिल्हा पर वे अनका चला उनको सार्वास्त्र कर रहा था । उनके हुइस को कुछ आस्त्रान्य किया ।

अन्त में अप्लामान बाग्राम की सहायता के दिना थीड़ भी सही। भीरें भारत कह क्षत्र रामा के बाँच्डर हो रामा और उसने पुत्रप की पुत्री भी।



'नहीं',-स्त्री ने कहा-'मुफ्ते तो वहां कुछ अच्छा नहीं लगता ।' 'तु इतने वर्ष बनई म रही, परन्तु मुनदी नहीं, अल-बल।'-कहरर

वार्तिन्दराम अस्त्रतं पूर्वक उनको ईरानी की दुवान में घसीट के गंधी। अस्तिहात्री की जीवा में कुछ चिचित्र प्रकार का तेज समा गर्मा। अन्यकार में भी वे जयकत लगी। उस दुकान म से दो मियाँ माई निवन भीर जराउद्यान हुए चल नव । अस्मिहोत्री ने नि द्वाम छोदा और शिश-अब की ओर कापस सुद सवा । उसको लगा कि सुध्दि जलकर राज है। गरी है। केंग्रल जिला से उठकर आये हुए जब बड़ी चूस रहे हैं। मन्दिर की अध्यता उस इमजान म भी बीभत्म क्या । उसन मस्तिर के गर्भ द्वार पर शासर यहर का प्रणाम दिया, परन्तु यकर दुछ इत्रिय-मे जैने । जाम-पास का विदान ना प्रकास अन्यकार में भी अधिक कटकर लगा। पूजान

ब्राह्मण का देखकर रागडे खडे हा गरे। एक कीने स हास ब्राह्मण बह बहा रहा । पान ही दा प्राप्तण बेटे बानें कर न्हू थ ।

'मारी, कल बढ के यहाँ नवस्पति है. जानत हा ?

हैं 11-दूसर न रहा-वर राम

'szz /

मर प्रशासनम् हे ।

इस अभि जालगण र अन्यास न्यूप्त कर ५ र १

44 4 2 24 05 445 4 4

4 40 20



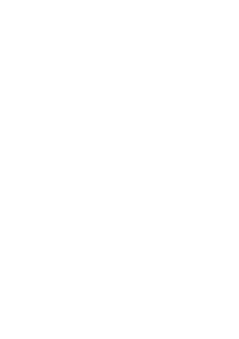
उस सरकारी जा का न जन हु रच देखे । उसरी जीगों के गाम-त्वे (राज नाचना रहा । उसने आकार के बहान किये । कालों में हरा नाम, काई हंगी प्रधान हुए कह रहा वा---'वश यश दि धर्मन्य महानिभवति नारत । अन्यत्वानमध्येत्व नदारमान मुबाध्यहम् ॥' रत्न 'नव्या रहेवरक, बाद्या चादत दिखा' तसमें मेंह दिस्य हैंह नता, नाव बन्द हा मना और बना दिमानों में नम्पदार छा गया। नीमन

नवा का तक बन्याचा और मूंद में बाता ----तलाविनुवरेष्यं ! वह उम ह भूत तक जा गरी, अपन चही और तक पहुँची । यह स्थिर नेपी

दाना की बहुरियों पूर्व हा नहीं ।

बात बढ़ा । जीव करब हो नहीं । विकास अपूर्व हो गयी । प्रमुत्ते विदेश पाति बहुन लगा ।

46



देता । कुछ लीग उसे पानस कहते, कुछ सनकी समभते और कुछ ले उसे महापुरप मानकर उसमें थडा रखते ।

समानी होने के नाने वह रंग में सुम्बर्ध खवाया या और सेर्स ही हम उनको भी यह पारणा थी कि राम और इस्क हमारे ही तम है रेहें होंगे। किन्यु मेहस्क में तो उसे एक ही बात की दिव सो कि र की समानता होंगे हुए भी उन्हें तो बोलह नाएक रामियाँ मिलां और सिर्ण की एक मिट्टी की रामी भी न मिला पायों।

रा की महायानशासमा होने पर भी वह अपन को कामदेव में ना नहीं सामगा था। यापि नक्षे होने के नामें देश यह वर्म दो मही है है में पिस्ते का मान-पिता कर्मन कर्म हिल्ला क्यांनार के बार्म को हो है है भी पिस्ते का मान-पिता कर्मन कर्म हिल्ला क्यांनार के बार्म को हो मूख्य सार्थार पर अपवाहियों क्योंना पहिला कर, लेकी जीधकर, पंचारारी क्यांना परि पर अपवाहियों क्योंना पहिला कर, लेकी जीधकर, पंचारारी क्यांना परि में डाककर और काम पेया काला दोका देकर विकालता था नाव देशा क्यां था मानों अभ्यावीय के जाता से क्यांने हिए किली को मानु हो प्रति क्यांने क्यांना कर उनके सार्थ पर लाल पकी हीई क्यांने दोह थे। हो। चिला विकाल करने करने माने पर लाल पकी हीई क्यांने क्यांने हों ही सार्थ निर्माण जा बाता अपने नाव में यही समस्ता था मानों नगर ही सार्थ ने सार्थ करने के लिए यही हो। बहु कारी हो हिली बोला के साथ ने सार्थ करने के लिए यही हो। बहु कारी हो। हिली क्यांने क्

पिम्ल त बाधना जिन्दु सम्भा अगुरीय स्वयंभवन संघ, समाववादी दर बस्मोत्तर पार्टा आहं सभ सम्बाता ॥ वानी-सारा न ताम वितावर बसा देशा बहुद बस्त बाल बद्दाण तथा कर प्रस्ता कर्मा तथा बाह्य कर्मा कर्मा जानिका और अगा व स प्रशास वा ए ए । एस्वा बस्त एस्वा देशा उपकी तस्या



٤ą

निरीह पिल्डे ै मेरी तुम्हारे साथ बडी सहानुभृति है । जिस देस में दहेज का इध्य घर में न होने के कारण लाखी कन्वाएं कमारी रहकर नुहारा तक बाट देती है, जहाँ अपने विवाह की चिन्ता में घठते हुए माता-पिता की मनोव्यया को सहन करने वाली संकड़ों कन्याए यम को वरण करने के दिए विवश होती हैं उभी देश में ऐसा एक भी पिता नहीं जो अपनी कल्या लाकर तुम्हे दे शांके , ऐसी एक भी कल्या नहीं जो यम के बदन

तुम्हारे गर्छ में वर माला डाल दे ? काला रत ही बायक हो ऐसी भी बार मही है क्योंकि पिल्ले के रच से भी अधिक गहरे रम बाले, पिल्ले से भी अधिक विक्रत रूप बाल और पिल्ले से भी बड़ी अधिक उजहर, मार्ग, देहाती आज दम दम बच्चां के बाप वन बैठे हैं। उन्हें भी दो कही पानी मिली होंगी न ? पर न जाने पिल्ने ने ही बहुत की दाडी का ऐसा कौन-सा बाल नीव

किया मा कि उसी के मार्च से पत्नी भिलने वाली रेना उस बीमुहे ने रमड बिटावी । धोडे दिनों ने वह मुक्ते विका नहीं था। मेने समक्ष किया वा किया को उमकी साँठ-गाँठ बैठ गयी होगी या बहु बही बाहर चल दिया होगा। रमते जोगी वा टिकाना ही क्या ? दो चार दिव तो मंने प्रष्टताछ भी वी

फिर में अपने नाम में लियट गया। मैने चिल्ले को भलना प्रारम्भ कर दिया। मुमोगवछ मुक्रे बन्बई चला जाना पडा, इमलिये पिलेड और उसकी

स्मृति बीनी मुभन्ने दूर ही वयी । पिछली दीवाली के दिन में अपने एक मित्र में मिलने शान्तात्र बन्स गया था। वही बात-बान में उसने फिल्डे की चर्चा छेड़ी और बहने लगा

कि वह आवक्त वर्द म एक हिन्द्रनानी परिवार के साथ रहना है। बनई में गुजराती, मराठी, योवाती, बडामा, सिन्धी, मारवाड़ी, पारसी, सिस, बीहरा, खीजा, मजनमान आदि अनेक घेटो में हिटक्टानी भी एक भेद है जिसका अर्थ है युक्तप्रात का रहनेवाला। अर्थ बड़ी उत्सकता हुँदै



पीछे-पीछे में । मुक्ते अपनी समाई चौडाई पर जो अधिमान या वह बाब इन देवी के आगे गलकर पानी हो गया । मुन्हें केवल यही आरचयं हो पह या कि यहाँ की सीडियाँ अब तक बची कैसे पह गयी, छत अब तक अपर ही क्यों है।

वे पलग में जा नमायी और हांफने छनी। मैं एक मोडे पर वा बंध और एक समाचार-पत्र उठाफर पहने लगा । दवास की गति ठीक ही पूक्ते

पर उन्होंने मुख्ये पृष्टा—

88

'तुम पिल्लं क् कैम जालो हो ⁷ मेने सब कथा मधेप में वह सुनायी । उनके बीहे, गोल, गरहारे

विक्टोरियाई मूल पर प्रमाना की एक मृत्व धूंधली रेखा देखकर मुक्ते भी उनसे बात बरनं की प्रेरणा निली । उन्होंने मेरे अतिसक्षिप्न प्रस्ते की को दिल्लन उत्तर दिया उसका मागछ यह है कि वे जाति की देख है, मेरर में उनका पीडर है, वडकी में व्याही है, उनके पति पिछले हिन्दू-मुसलिम

दमें में काम आये, उनके पिता शन्याती हो गये, एक स्थानी करवा है जो बी । एव पान करके मूछ काम करती है, बया करती है वे ठीक ठीक गरी बना सही, पर इनना अगस्य स्पष्ट हो गया कि उस काम को सीसने के

लिए ही वह यहाँ जायी हैं और इमीलिए इन्हें भी विवस होकर महाँ आना पदा है, यह । पर पिल्ले में भी बान-पहचान ही यह है और वह पूत्र के समान इसी घर में रहता है, उसके नारच बड़ी नविधा हो गई है घर-गिरस्ती में सचित्र उनको करवा के विषय में सभ कुछ अधिक नहीं हाल हो सका किन्तु उनके जियम म म दलना अधिक जान गया कि कवर उन्ही पर प्रसंग्य

जिसका म मर्गात वहाता प्राप्त के त्यानि वा शकता वा । त्र स्त्री को कल्याचा वर्ष के काल सालका पुरुष जन है आसे **नुकार, नगाओं**, शन्त देख र वर्ष स्था पर जनी भी और सन्दर्भ । पुरुष बनान बनाते

इद्या न कर स्व बनारी वर्गन राज परका परकास्तप श्रीर शीमें



चना का आलेट न बना हो, यहाँ तक कि मेरे माथे का चन्दन, सिर पर गी टोपी और बारह मासी सदरी भी उनके सूक्ष्मवेधी नंतो और मनेभेदी कैना में न बच पायी। पर में भी स्थितप्रज्ञ बना बैठा या। एक कार में सुनगर भरकाल उमें दूसरे कान में निकालना जा रहा था। में जानना है कि मेरी इम उदामीनना में उन्होंने मुक्के परम मूर्त, बुद्ध और जड ममभ्रा होंगा किन् इसका मुक्ते निक्क भी बु क नहीं हैं, क्योंकि दूसरे मुक्ते क्या और क्यों नमन हें इमकी मैने कभी जिला नहीं की और अब भी नहीं कर रहा था।

विमी भी अतिथि को जलपान कराना, पान इलायकी देना भारते की प्रसिद्ध शिष्टाचार है। मिन्धो लीग पायड-पानी में मल्कार करने है, पंजार म दही की लस्सी चलको है, युक्तप्रात में पान या मिठाई नमकीन से स्वागत रिया जाना है विहार में चिउंडा दही वरोमा जाना है, बवाल में उसम्बन देते का शिष्टाचार है गुजरात में चाय की प्रया चल निकली है, महायान में नमकीत नीगदाना और चिडडर दिया जाना है, मेरठ की ओर गावा ने लाग मिलारेन फिलालें है एक भेली गृह देवार वानी का लोडा बढ़ा देते हैं और कुछ नहीं तो कम से कम वानी तो मभी किया के ही है। हमारे में

परानी सीम्त भी है---जासन पानी मीई' बान ।

महत्रन के घर महा सहस्त । श्रीमत्त्रच सच्चासर रहा हा और अपर रही हुए भास्तुन्त की

प्राप्त र र र प्राप्त रहा है। र प्राप्त र रहा रहा रूप रहा भी सबी र ८१ ० ० व ८ । राज्यस्य उमी भी ।

ं । । । व्याप्त वर्ष वर्षी भरीर

ं का बारक समाने व



मस्य-सङ्चयः

14

अस्य भगवानर नकारात्मक उत्तर दिया । में समन्द्र गया कि पिले के पत्र अभी मीधे नहीं हो रहे हैं।

फिन्डे में मिलने पर मुन्हें इतनी प्रसप्तता हुई थी। कि में जब लीटर षर आया तब करी मुक्ते मुख जाबी-जरे पानी तो मेने पिया ही नहीं।

उस दिन में पिलंद भी मेरे पात्र आने जाने लगा और शारदा जो भी। कभी वें दाना अवेत्रे-अकेत आते, कभी दकट्टे, और यह कम लगभग नीत

महीने चलता रहा। 'प्रमाद' जी ने आजकल के महिला-आन्दोलना ने हरकर और 'डीड़ मैंबार, मृत्र, पम्, नारों सिन्यनेवाले मर्वकच्च नविना-वामिनी-कान्त गास्वामी मुलनीशम की के विरुद्ध रिजयों का मुका विद्रोह देखकर उन्हें बहुमाने के

लिए भुडे ही लिख दिया है---'नारी तुम केवल अञ्चाहा विश्वास रजन नन पद तल में १' और न्त्रियाँ भी इसे पह-मुनकर फुटी नहीं समानी । पर वे यह नहीं

भानतीं कि 'प्रसाद' की से भी प्रसमें पुरुषों की बड़ा निद्ध करते हुए कहा है हि---'नुम विश्वासकती पूरव हिमालव के पैशे नले 'शह मुक्छ' पीपूर्व स्रोत मी बहा करो ।' उसलिए यन इन पक्तियो को 'स्वान्त: मुमाय' इन प्रकार बदल दिया है---

नारी कभी गरी ही भदा

पर अब ईच्यां मात्र बची है। कभी रही हो मानव-माना

पण अब जम की बच्ट चनी है।।

बन्पन क्रिक्का के संख्या ये बाबा वह वेद बाबा अवस्था मुना होगा कि । भीत ना मिट्टा का बार वार नाजा । अंग्रह "बबाएडना क्यो अपने पृति के पास बान बानवाना बांग्यव स १४१ ४३ जवस्या नव की क्योंन्यमें स



यर्प-सञ्जात इमीजिए में बन कभी बाहर जाया, अपनी फुनी को साथ से जाता। उन्हें पाचा देकर में अपने अस्मा को घोमा नहीं देना चाहता था । मेंने भी रिज

40

शिमी बोगई पर या केन मोटर के अडडे पर जिल्ला विस्टा कर 'अनपूर्व अवन रिन्तायी पड जाने और वहीं नमस्वार-प्रकास भी हा जाता और नुगायमसन्द भी। ज्यालगं चार सहीने बीच चर्छ। में समस्त्रताथा कि इस बीच गांगी गान्द्रा न ही वह दिया हाता-

■ या या वहिये सारदा के घर जाना छाड़ दिया। पर वे दोनो या अहे³

'नुम सम पुरुष न मा सम नारी' । या पिरले ने ही कह दिया होगा-'अपिन है मेरा बोदन सन ।'

च्याकि में बारण्डा जी के प्रयम दर्शन के हीदिन समक्त गया था कि विभाग न इनके भाज पर भी पिष्क की भाग्य रेखा बाजा छात्रा ही ठोड़ मारा है।

उनका मृत्यरी नडकर पृत्यरमा का, कामलावी नडकर कोमणना का, मीलवनी कहकर मील का, मुगासिनी कहकर हाम का, हमनामिनी कहरी हम भी गाँव का, नत्यनी कहकर तन्ता का, यनु भाविणी कहकर नन्

भाविता का, विकासिकी करकर ग्रमार वेष्टाश्च का से एक साथ नम रतना नहीं चाहना था, एक तो स्त्री [नचाहन हुए भी उन्ह स्त्रीहीकहन की निषम हो रहा है। दूसर समेवादिनी, एक दो निदलीकी; जिस् नीम नहीं। इसक पति हात का मीनाव्य वही प्राप्त कर सकता था विवृते विकृत वर्ष

बन्मा न जीवनावाहन, पन्डह अन्या न यम बाहन , इन्हीन हत्मा नै भरव बाहन और पञ्चीम जन्मा में एडमी बाहन चनन की प्रप्रतिक न रूपा का हामा । सन्द्र विश्वास जान लगा कि विरूप न इतनी पार

नाका नहां का हाला अपन राजा र का नव महादव की के मार्च इंदर राज का प्रतार के जब राज राज वा जाना द्वारा करिये and a seas a marry deray and the



मेरी श्रद्धा और भी गहरी हो गयी। मैने श्रद्धा-विद्युल होकर क्ट्रा--

प्रपति फर्ना को भी मेने समाचार मुनाबा । जिले पूटे मुँह भी गिन नहीं भाता था वही पिन्ने की इस महता से प्रमावित होकर उनके किर चार लड्डू के आयो---'मूँह मोडन कर को ।'

बिस दिन वह दिल्ली के लिए बखा उस दिन में भी फल माला हेका उसे मिदा देने बोरी बन्दर तक गया था और मेरी पत्नी भी हठ करहे मेरे साथ गयी भी।

वर्गनारी दर के अनेक पुनक पुनियों का बगुह यही गहुंचा हुआ आ हि। कि अंची के अने में तीन स्वाय जिने हुए थे, एक एव र महादेवें मी, हरें र सारा थीं, ही सिंद र इन्ह पिल्के हुए थे, एक एव र महादेवें मी, हरें र सारा थीं, ही सिंद र इन्ह पिल्के हुए थे, उनका घर भी—सेक में निवाद के प्रमुख्य के प

साडी ने संदी दी। यादी चन्त पडी, और हम कोण अपनी महत्ता पर तद नरन हुए जीट आय और सबस अधिक रस नो मध्ये तब आया बंद भी पन्ती न नडा---वट अच्छा य बचार।

उपाक्त बार्स्सर्गकः जे ज काण को प्रतिक तथा और अनुकरकता नहाँ है है



यस्प-सञ्चय इस पत्र को पड़कर एक बात तो यह नई जात टई कि महादरी में है

98

त्रितने नाम मेने कम्पिन किये थे—विकटकपोला. करालपोपा, प्रवयः वदना, कटातृ-रारीरा, महिष-मात-मदिनी, मानव हस्तिनी आदि, वे मने निरपंक हो गये और उनका नामकरण करने वाले पुरोहित पर बडा रा आया कि यदि उस मूद को केवल पात्रवाची ही नाम रखना या तो गर कडाई, रामहिंदिका, राममटकी, राममुख्ला क्यो नहीं रक्ता, यह राम स्टापी नया दरिङ्ग नाम उसे सुम्छ । पन पडकर पीछे उक्तटा तो उस पर पिल्ले ने लिला मा-भीने और शारदा को ने कम्युनिस्ट पार्टी के त्याय पत्र दे दिया है। विवाह में अवस्य आना । और उसी के नीचे महिलाई अक्षरों में मारदा जी ने लिसा था-'माभी जी को भी अवस्य लाइयेगा ।' पन पहकर में कितना अधिकाया हुँयर यह तो आप इसी बार ने ममभ सकते होये कि उस पत्र को मुरेड तुरेडकर मंत्रे तत्काल रही गी दोकरी में फूँक दिया। मेने अपने महत्त्व का जो काल्पनिक प्रासाद उठाया या वह इस पत्र ने शाम भर में ध्वस्त कर दिसा। जो पिल्ले अपने अभिम्न मित्र से इतना कपट करके इतनी सब बाते छिपा मकता है, शास्त जैसी अरूपा कन्या से विवाह करने के लिए इनना रूपक बोध सकता है वह न तो पागल हो सकता है, न सन्ही। और महापूर्व ? कि, वह महापूर्व की पम पुलि भी नहीं हो सकता और में पिल्ले के उस प्रवचनापूर्ण रूप पर

मभीरता से विचार करने लगा जब उसने मक्त पर अपनी महता का आठ€ जमाते हुए असत्य वहा था---में कम जा रहा टा'



राज्य-सङ्ख्य तीर दिया था । पन्ट्रसम ने विज्ञान नहीं पढ़ा और न किमी प्रयोगपाला ^व

30

प्रयोग किया, किन्तु ठर्रा और जल ना मिथल इस चनुराई मे करते ये कि भदाम नपुरी की स्वर्गता जात्मा भी हचीतिरेक मे विद्यन हो उठती और उनकी मध्याला के सदस्यों को तो इसका कभी सन्देह भी नहीं होता i पलदूराय साहित्य के उम सिद्धान के अच्छे जाना वे जिसके अनुसार करा मा ठिपा लेगा ही सच्ची कला है।

वह हिमाब जोडना न जानने हो. किन्तु धन जोडना जानने थे, वह माहित्य न जानते थे. किन्तु साहित्यकारों को जानने थे । उनमें प्रतिमा न भी, किन्तु प्रतिभा उनके पान एकत्र हो जाती थी। द्रव्य-वस्तु है श्यापार से द्रव्य बढता है, ऐसा जान पडता है। उनके पास भी रूप्ये उदी गति से बढ़ने लगे जैसे उत्तर में प्यान बढ़ती है। इसी बीच स्रीप में लड़ाई

छिड गयी। ब्यापार के अनेक नायन दिलाबी पडे, मानो अलीबाम

के लोह का द्वार लला। पलटराम ने एक लगाया और बार पाया। कुम्हार के आर्थ की अभिन से मिड़ी के बर्तन पनके हो जाते हैं, समर को अभिन में होगो के घर करने से पक्ते हो गये। पहरदाम की नीधी मन गयी। उनकी संपत्ति अद उसी परिमाण में गिनी जाने लगी जिन परिमाण में रावण के पुत्र और नाती मिने जाते थे। बोस्वामी तुलसीदान ने बताया है कि किस अवस्था में किमे छोए देना चाहिये । पलदूराभं ने अपने नमें वातावरण में मध्याता किमी और रमन्त्रेमी व्यक्ति के हाथ में

माँपी और लीहें के ब्यापारी बन गर्य । ठीस होने पर ब्यापार भी तरल में टीम यम्मू का करना उन्हें ठीक ज्ञा । मरकारी क्रमेंचारियों का कुपा-स्टार्स हजा और पलटराम को लाइमेन्स मित गया। कहा बाता है कि सुद्रकाल में गहरे को भी किसी व्यापार का शाहमस्य मिल जाता ना बह लक्षपती बने आता । पत्रस्मान ना उदार्था एपका के संपन्न अंजन गढा । शंसचन्द्र सर्व

रण ना पत्रण को मार्ग , अस्य बन स्थ उपवादर शक्क मारी ।



रहा हो।

पलदशाम--- वस

इस प्रकार प्रवास किया मानी साझातृ विध्यु भगवान की नमस्कार ह रहे हैं।

हुंगा और देवता मौन रहते हैं। योडी देर दोनों व्यक्ति चुप रहें। फिर मन्त्री जी बोल--'अखिल भारतीय हिन्दुस्तानी सडल का वायिक अभि

मन्त्री जी न रहा—करना कुउ नहीं । चल चलियगा

मन्त्रा सी कार्रु⊸र । और कु, कर दीक्यमा ।

चुन रहे। उन्होंने सोचा होया मेरे दर्धन के लिए कोई आया है तो में देश्त

मन्त्री जी बोले--- 'बाप का ही दर्जन करने के लिए आया हूँ ।' पस्टूपा

वेगन है। सब लोगो की बडी उच्छा है कि आप ही उसके सभापनि हो।' मूर्वता देवी का अपरिश्वित प्रसाद पाने पर भी इतना तो वह नीव ही गये थे कि ऐसे अवसर पर क्या कहना चाहिये । नोले- 'इसके लिए नी कोई योग्य व्यक्ति कृतिये । ने अपड वहाँ क्या करूँगा । हम लोग उनी बानों की प्रश्नमा से प्रमाद होने हैं जिन बानों की हममें कमी होती है। जब मूर्ल को कहा जाता है कि आप बृहस्पति के बाबा के समान है तब बढ़ प्रमाप्त होता है। मन्त्री भी ने उन्हों सूत्रों का सहारा किया को भागस्य के काल में चल आ रहे हैं । बड़ा-- बालन और विश्वविद्यालय में पड़कर ही नोई विद्वान् नहीं होना । आपन समार के विश्वविद्यालय में शिक्षा पायी हैं। और आपका तिनक मा महेत हो तो किमी विश्वविद्यालय से डी॰ लिट्॰ दिला वृं।' पलद्राम ने मोबा-पलद्राम डी० लिङ्० कानो को क्तिना मपुर लग रहा है। पलदुराम बोल--आप लोग दो बहुत तम करते ह। फिर यदि जाप लोगों की सेवा न कई तब भी नहीं बनता। कृष्यि मंत्राकरना होया। वैसे काई नवविवाहिता वस अपने पति से पोल

पलदूराम ने देखा । पूछा--'कडिये ।'



मुमलमानो को सनभेद मिटाना चाहिये। हमारा प्राचीन देश भरतवार

1.0

विदानों की मीड से ।'

मुलमुन्यों के लिए प्रसिद्ध है । हमारा आदर्श बैल है जो स्वय मुमा यहाँ है और हमारे लिए जनाज छोड देता है। आप मुमलमानी की मलाई कोरिय,

गत्य-सञ्चय

यह आपके मार्द है। हिन्दी और उर्दू हटाकर हिन्दुम्नानो का व्यवहार कीर्विष मही देश का मूचल होता। आएन के प्रेम के रल में हमें भीवना काहरे।

हम एक दूसरे का मार बहुण करें, गले मिलकर एक दूसरे को मेटें। कतह हो मोह में दे डालिये, स्वाधीनक का मोर जा गया है। हमें इनका स्वातः

करना चाहिये । में मायण देने के योग्य नहीं है । विद्येषतः आप कैंड

भाषण का भया परिणाम हुआ कहने की आवश्यकता नहीं।



सहायता से ऑन प्रमालित कर दी गयी। राल बन्दन, रहा पुण, रात-वान, तथा पूजन के अन्य सारी राल उपकृत्य काकर प्रमाणन नार्य ने रात दिवे । जलती हुई जीन-तिवान के राताम प्रकास में वे तब और में अरुगाम हो उठे। विल के लिए एक महिन्द लाकर मूप में बान दिना पदा तथा रालाम नीदरा, उड़ेल उडेलकर तालिक पोने लगा।

पर्याप्त मात्रा में मंदिरा भी चुनने पर जब उठके होत्तर ही नहीं.
करोल कीर चित्रक भी महारण हो उठे, उत उठहरी आजा भाकर प्रवर्णने
एक तर-कहाल के बाया। स्थान नमें के ऊपर उन नहाल को एके,
नानिक ने अपना आंका बनाया और उनी पर वह बंठ गया। नस्प्रेप के सस्पि पांची में रहे हुए चुनन के रक्त उपकरण कुण्यास्त्राची के निर्माण मार्थी भी पांची हो मुस्ति करने को । स्रोतान्त्र शानिक मार्थाल हो उठा। एक हास में उनने सपर किया

और दूधरे हाथ से ठीवन बहुव । यून बद्ध महिन के पाद पहुंच कर मर्गे समे हुए आपात हारा महिन को गरंद कार दे। पूर्ण पर छटक कर स्थित पूर्वी बाजा मलक तरुकताने तसा और सरोर छटपाता हुआ पूर्वी पर गिर दमा । बहुती हुई एक की बादा गर्देक तो जप्पर में नेकर तानिय ने महाकाली के पर्यो पर चडावी और किर घीमता है और अनेक बार सम्पर्ध की पर पत्र कर्सक स्था लाग किया। एक सम्पर्ध समेते हुए एक की भारत उसने हमतकुर के पास पर दिया। उस मा भी निस्ताम दानि में सोणवा-जियत तानिक की भीषण आहित देगार निरस का समस्य प्रमास की कोण उना । महिन्द के आमेत कीण में की

हुई तान्त्रिक को जिप्या स्थामनायी भी भय से त्रस्त हो गयो । नान्त्रिक न रक्त बच्च के उपकरणों से बहाकाली की पूजा की

और लोमजरिय-पुक्त महिष-माम लकर हवन करने लगा । पैझा^{दिह} यस्य ॥ समस्त मन्दिर भर उटा किन्तु जजान उक्त की भौति हवन ^{करते}



और नद्दरता को दाल्या है करने की जाता नियों। परन्तु अदहरत ने गोर्स के लिए नहार गुरुक, दिवाधी नेहुएव कीरिया पहार्टालुक की दिवास्तर में यहारी दुई में प्रमानका के में के दिवा का सामान्त्र में प्रकार के दिवास के प्रमान्त्र के हैं। कार्यों के प्राप्त के उपकों प्रभी देनके में कार्यास्त्र करीं हो गढ़ थे। उनको विभिन्नवन्तासमा का उस्त दासार पूर्व नाहत्र कर नहीं

पार्त करा । पार्त कृष क विश्वतंत्र की अस्तात्व प्रतिप्रा ने शहमीर वी स्थि स्वाद् ता १३४ व प्रत्य कर उपने अपने प्रतिद्वाती का हाथ पहड़े विश् भार एक प्राप्त नदक्ष वही हुई बीडी---

नग भारतका । और नर प्रदर्शका उत्तर था।

न बान 1988 बीमा में कीन गी दोना या बिने समत ही गुण्ड हैं बात की किया न भाव भी बीट अर नगा बाग गया, वेन उन्हें बारमा को वर्गाट में निवाद कर बड़ी दुगर र नगान गर दिनों ने रूप रिग बार नव 19 नाग के नाम्युल नवाहिन, माहबूबन, गालवारें की बीटन

મનગન ટ્રા લગા છ તા તા વિજુણ હરવા તાવી માં વશ્યત તહેવા કે ભૂવ તે સ્વાદા? દે "આ તાર હક્ષ કહેન પર પહેલા વૃત્ર પર્યાત હતા કે હતા વર્ષો પ્રોકે"

है है। र बन्हें में इस महत्व श्रीकार्ननपुषा बारि में हहा— बन्दर दुवे हैं। यह उटहर शास्त्रार्थ सम्बन्ध सामन प्राप्त है हैं।

मान्य कृष्य । त्रव ३०० चारवाच व्यक्त व्यक्त

कर पार पुरस्त कर साथ करना यह अपना सहार साथ प्रस्त स्था । इ.स. ११ - कर्ना ने उन्न साथ साथ करने ने बहुत स्था कर तूम राजनी है इ.स. साथ अपने तीन देशन कर देशनी एकान करायक से नाम गईनी है

क जाजा, जोर राज 'इता रज 'इती प्रधान हजारहत वे बाद ग्राही है - नव रोजी को व उपारिकों का राज्या व व्यव प्रारक्त बनदान ग्री

नम अन्यत्र वार्त व रचन न दर्श व वह दर्श सा रहा है।



65

पुत्र आया । यहाँ सब समाचार सुनकर वह स्तब्ध हो ग्रमा । गुरु में उपने अकर मारी घटना यह मृनायी ।

उमने कहा-- बत्स है उस कारमोशी विदुषी की समोहन विद्या है निबि प्राप्त है। उसकी तान्त्रिक शक्ति के सम्मूल तुम कुछ न कर सकीये। अन प्रतियोध का विचार त्यान दो।'

पर भैरवदस का अन्त करण जन्याय, अपयान और प्राप्त प्रतारणा की ज्वाला में दरम हो रहा था। उसने अपने जीवन का लव्य बनामा प्रही

बानों स्पन्तियां का अपमानित करना, उनके जीवन की मूल-सान्ति विन्द करना और पाटलियुत्र के नस्मानित यद ले उन्हें नीचे गिराना । नान्त्रिक निद्धि प्राप्त कर अनिसीध केते की कामना से वह काम^{हर}

के कामाधा मन्दिर में जा पहेंचा। कारास्त्रिक भीषणानम्द की पांच वर्षों तक अनवरन और मस्तिपूर्व

परिचर्या करने के अनलार उनने मारण, उच्चादन और शीलन की सिदियी प्राप्त की । अन्त में अपने हृदय का बाद्यव आश्राये भीपणानन्द में व्यक्त दिया । आषायं ने महाकारी दयामा भा अनुष्ठान करने की अनुप्री

दी और यह भी नहा कि दीपावली की नाजि में पांच वर्षों तक इस अनुष्टान भा वाधिक आयोजन करना पहेगा, जिसमें प्रतिवर्ध कमा विकास, मेरी उप्दू, महिप और नर के लोमास्यि मुक्त माम की बन्ति देनी पहेगी। प्र मकार की जपानना की अपनाना होना और भीषण परिस्थितियां ^{हा}

स्रात पर तुम अगिमादि मिद्धि प्राप्त करने का प्रयान करी ।"

पर प्रतिष्टिमा की भावना में विकल भेरवानन्द को कुछ अच्छा न समा

हर करने पर आचार न महादवी दशमा की पव-वार्षिक अनस्तान विभि दिश्यार हे माथ समसार और नवसकरर परसंतर का रहत्व में इनारा पर

सहता हागा । अल्पमें उन्हाने कहा--- 'बच्म भेरवद्गत, भाग ने गुम्हे में अन्त शिष्य दीशित करता हूँ, चरन्तु में चाहता हूँ कि इन प्रयोगों की नामना के



एक नेया नाम भी नष्ट न कर उसने एवं सम्रद्ध करावा और अपने पुछ अनुवारों को साथ ने कामी नी और बस परी।

[शार]

सिंद्रा-विश्वाली राम के नमान उस होगावनी ही हुन्या तर्वाहरी भी भी तारायन हुआ था। नाहब मृत्य हा मुक्ते पर जब दर्गतारी वर यहे, नव श्रेगरायन न स्कारण के दुरवीक्षारण एकच हिंदी। जाज शेरा-नम्ब ने श्रेगरायन के नागे बन्य स्थायनाथी को विजयाहरू बारह वो माने भी जाजा ही। का विमानसम्बद्धालय स्थाय हुए बारह को जाने पहुँची, हव

समय निदित्त बालक के भाग मुख्य की देखकर उसके हुदय का मानुर्य उसी

प्रसा । वह मुद्र मह है है नेरबानन है महेना हो में अनुपरी है। वह वर्ष भी भूक गयी हि नरबानन ही मीमा में बाता पाठन हमाने ही अवसे मिन है, उसन बनना नरबान है। नाम ही मह भूक गयी उस हमा हिन्ह ही कूमा, दिनाह हाएक पविष्ठ हो मामहाने होने पर, मामहान्य होने कुमा, दिनाह हाएक पविष्ठ हो मामहाने हैं उपलब्ध है निव माम दिनाह होने पर अवसे पायनमानीह उपलब्ध है नेन्द्र मामहान्य होने पर अवसे पायनमानीह उपलब्ध है नेन्द्र मामहाने हैं पर मामहान है पर मामहाने हैं पर मामहान है पर मामहाने हैं पर मामहान हैं पर मामहाने हैं पर म

भागा तम सन भाग सक्तव नगरवा क घरणा से भागत कर दिवने हान कितन कर और निकार क्यों ने भाषात्र को नाम पायन करते में ना हर चर्णरून रूपर के नमान व्यवसार क्या पर नाम बहा रहासमारी



एक ओर बालक को लिए हुए दोना स्त्रियां अन्यकार में भागो जा रहे थी और दूसरी ओर मण्डए में बैठा तान्त्रिक बारम्वार स्वामलाबी बे पुकार रहा था। श्वनपाल को उसे बुलाने के लिए भेज कर भी वह दौरा

हुआ स्वय उसकी बुटी से वा पहुँचा। स्वीकी एक कैंग्ली छाता है छिप कर उथर बातें देख वह पहले ही आधानित हो उछा बा। पुरी का भूत्य देख कर उसका हृदय रहस्य समक्ष गया। गृष्त द्वार से बहु भी बाहर निकल कर नयर की ओर जाने वाली प्रवडण्डी पर स्यामकाणी की

पुकारता हुआ बंग से दौड़ने कमा। प्रष्ठ पूर तक तो कोई दिमाबी नहीं पड रहा या। परन्तु बुछ ही समय बीतने पर उस गहन अन्यकार में ही पूषकी मूर्तियाँ दिलायो परी। भैरवानन्द की गति तीव हो गयी और स्यामलांगी को पुकारने का

न्वर भी तीप्र नर हा गया । दोनो का अन्तर धीरे-धीरे कम होना का रहा

 बा और न्विया, नान्त्रिक का पुकारना सुन-मुन असभीत हा रही थी। इर के कारण उनके पांच कांपने रूपे से और यति मन्द्र हो रही मी। इतने में भैरवानन्द ने गरब कर दाना निषयों को दक जाने के लिए कहा। उसकी बाणी में जाने कीन सी पास्ति थी, जिसे मूनने ही स्त्रियों की पार्ट पूर्णनः प्रतिषद्ध हा गयी । ऐसा जान पड़ा जैने पांचा से किमी ने बंदियाँ हान दी हा, गान्त्रिक पास पर्वचने समा।

दूरी अन्यन्त त्युन हो। जाने पर स्थासकानी को पुकारते हुए भैरपन नन्द न क्षा--हुष्टा नहरि । इतन दिना तक मण यहाँ रह कण जी यह विदेशासुपात !!

मा इ.स.च. एक वा त्रम संववत का बिहला । निर्मात के प्रतिनम क्षेत्र में इस क्यार का रूपर राज जना इरू है वह जारह लेक्स सभी

तर त्राप्त कर त्रा बारक करें छ र तत पत भी कृति कहा



वत्य-सञ्चय 4वत हुई। पर काश्मीरी विद्यों ने तात्विक के बरणा पर मस्तक रन

44

दिया और अंग् का अर्घ्य पदाती हुई कृदण स्वर म बोछी---'तानिस, पुरारी यांत्र के सामन में पर्गात्रत हुई । तुन्हार और तुन्हारे गिता के भाव बपरान्ध्रत करन पर आज मृक्त अनुवान 🎹 रहा है । मैं क्षामा बाहरी

है बारावर्त हुम जाब स्थां न अधा मातानी ! तुत्र की बांल की जाने वाली है न ' पर इस दिन पुरदारी धवा बढ़ी थी। जिस दिन शास्त्राये में परावित

राहर ना महता पांच्य ही बाबा म विजया और उपन शिवा का 14 भाषानाम हर हाला। नाम जाहर नो तुन्दर्भ द्वाना करता रे छार मेरी राव । युन्द पारिकी का स्थाप की क्वाला के आंध्रण उरका है ।" श्यामनाना को नाय न बालस का न शि हुई दिवृशी व श्यानन नारिक

में मान्ना है और जान पापा पर मृत्य पहलालाय हा रहा है। मरा नी श क नी, मना देवर के की, पर शांतक की रक्षा करते । पता मन मार्च राटी रहण बार बाली मध्यति का बांपकार व का बचन हावा म । इन

बानक का की काना है। मन्त्रकता व रूता । इस पांतराजी पानी ही प्राप्त का प्राथमिकन करने कर खर गाउन है नानाविन्द्र । स तर वाल्यान व नांद्र कर्न्न । यह एक हैरे पहर न

भारता माध्य होन बाला है जीन सना लोक्सी सुबोदय के साब भरी करने करना के देशा अर्थन्त्र शांत शांत्र हे लड वर्ध बांत्र के प्रतास के में पड़ कर में अपना नोक्या जरूर स क्षेत्र। बाब इस बावह की वीर इक्ट क्या क्यापाल एवं ब्रांग, तुन वाना पार्टकार । नागी

FAT 41 STG 4 60" + 10" 42 HEFTE - 214 A 212 THE DAT & AR W 4 W. G. 44 41 7 A \$ \$7.700 \$1.400 ... were we sent a year ast 411.475



शे शे मुश्री स्मलिनी मेहता

'स्त, स्त, स्त ..'

मध्य रात्रि की घोर निस्तत्त्वता वक्टे की गम्भीर ध्वनि है कार उटी—मेरी भी निज्ञा मण हो वयी। में दिन भर की यात्रा से यक कर वही।

उद्या-सरी भी नदा मन हा ज्या व सादक सरका यात्रा सं पक कर का सप्टेसर को कहूनरी पर सो गया थी। उस सप्राटी राज में प्रप्ते को व्यक्ति सदी ही भयावनी सम् रही थी। जनमाः उत्तरा कर्णभेदी नार बन्दे हैं गया और उसका स्थान एक सीभी कराह 'से स्टें ने से रिजा। वह कप्रे

का है। नेपायन क्या रहा ची जिसा कराह के क्या ने से ले लिखा। वह कपह इतनो दर्द मरी थी कि में कोक पत्रो, अनायास सेरे मूझ से निकल प्री— "यह कोन 'से धी के कि क्या को पत्रों, अनायास सेरे मूझ से निकल प्री—

"ह कान च ध का ज्यान कर रहा है "
"यह मेरी ब्लिन है।"—में और अधिक चिक्रत तथा स्त्रामित हों उड़ी।
श्री कें प्रतन्ताह कर अधकार से इसर उसर सूरने लगी पर कार्ड भी

विवासी न पक्षा । मेरा श्रुप्तम यह से कॉन उटा, फिर भी मेंने साहन वटार कर परन किया ।

'तुम कौत हो, कहाँ हो ?' 'में तुम्हारे मिर के अपर हूं, भीत देश का विशास बच्टा हूँ ।'

'स्या कहा चण्टा ? अव्युत्त ! तुमने मानवीशाची कहा से पायी ?'
'समार में बभी-कभी ऐसी भी महनाएँ हो जाती है निर्मू देसे कर मनुष्य अबक्भे में पढ जाता है । बचा तुमने बभी यह भी सुना है कि किसी

षण्टे का निर्माण करने में पिता को अपनी पुत्री का बलिदान करना पता हो। ' 'अपनि ?'

'अर्थात् यहरे कि मुक्त सर्थि में डालन के समय बातु के साथ भेडिं' 'बिजान कुमल कुश्रीय को सन्दरी करना का रुक्त श्री मिलाया गया।'



25

चटाई पर जा पड़ा । दुला तथा आंभ के सर्म सर्ग जॉम् उगके क्यांन भिक्ष नव---आव पहुंची बार उसकी विद्या का परिहास हुआ था। का बाई न अपन पुत्री दिला की वेला-उनका कारिटीन पका हुन

अभू व्याधित मृत्य देवा--व्यथा से उनका सुदय अभीर हो उठा, क्षां रूप रचत व प्रमत प्रमण---'fret at i'

रिता न अभि भारत और अपनी इक्तीती बेटी को हुदय में लगा क यह बार फिर क्ट क्ट कर के वहा । काआई भी रोने लगी । जब बीमू बुक वम नव क्वार्य न अम अपने दुर्वाग्य की नामूर्व कवा और नाप ही कार

रानामा समानी ।

धन नर कानाई एक टक रिला क मुख की बार वलना रही दिव BIR STORM रिया वा । मन्त्व का अवस्थात व (वर्षानव नहीं हाना पाहिए।

नाम कि न व प्रयास क्रीनिय । ईव्यन प्रयान है, यह सवस्य इस बाद महायस करना। में ना स्थम प्राथना कर्ननी । --- नीर कथायू किए एक नार entien per uig nien et utfauf were unt i

भ्यं राम बाजाई मा व महो । उपका नन्ता मा पन वटा मापता रही कि बद्ध के एका प्रोत्त किता कि उसके व्यवस्थार के भरे दिशा की हुन्त हुर हा बाद। बनावक इस उस पूरा का स्थान हा बादा का हुई ही

पहुण का उरहरा का काम में एडड़ा का और ना प्रतिक भौरान प्रशा में भार भारत दृश्य शाया न प्रमुख हा उद्यान E40 154- -

• वृष इंडा न में वह बड़ा बाम्य बड़ीर बर बन परी इस पूरी है पान त्रिन नमत वह कहर कांचकर हहेगी प्राची स न्यांदेश ही रही की

are are just are are one on one are and good are asing the



गत्प-सञ्जय देश्वर का नाम के कर ज्या ही धडकते दिल से उसने साँचे में धानु झांग्रे कि उसके कानां ने एक भीतकार मुनी' 'पितानी ! और कोनाई उसकी जीता

26

क मम्मूक ही उस तरन अग्निमय पानु चारा में कूद वड़ी । रिना पुत्री की बचाने के लिए भगटा पर उसके हाथ लगा केवल उसके पैर का एक पूर्वा बह मुख्ति हारूर बहा गिर पडा । समस्त जनना अवार् होकर उम

अन्तरानी घटना को दलनी रही । इस बलिदान का रहस्य कोई न समर्थ ATT | कानाई का अपने हृदय म रख कर में तैयार हो गया। पर मेरा जन्मदाना हु ल और सार ने पायल हा नया और जब तक जीविन रहा ^{क्ष}

भरे चारां आर फरे लगाना रहा । कभी-कभी दू न दवा चीप म अभीर है कर बहु मुख्य वृत्री तरह अक्राओर-अक्षओर कर बहाता और उतने हैं। जन स्वर में 'काजाई, काजाई' चीलता गहता जह तक कि नह हा^ई थव दर मॉल्य टावर न निर पर छ। एक दिन गाँव भर उपन पेडिस निवासियो का माने न रिया-वर्ड

मुक्त बबाना रहा और अधार्ध, क्षेत्राई तब तक पुढ़ारना रहा जब वर्ष कि उसके बाज पत्थक न उह समें । बात काल वह मंदे ही शीर्ष मृतक पानी

बाद बहुँ। पर्णियत हा स की कराह । में बुख प्राच क्या केरी प्रशीता करती रही कि बह तक और हुछ की बादमा-नार बह जाना वा मुख या और मने देखा, प्राची में सुवीरी E TO WE 1

grown of the art of art of art by by



हुआ। क्षण भर में वह वहाँ जा पहुँची, किन्दु दोनों में में किसी ने उन नहीं देखा। उसने मुना पथिक वह रहे थे--- नारिपुत्र गुरावर है, उन्हें मृत्यु-दण्ड मिलेगा।' वे जा रहे ये उसी जोर, उन्हें बन्दी करने । बालिश अधिक न रक सकी। उस व्यक्ति ने उनकी सम्पूर्ण चेतना नष्ट कर धै। उसे प्रतीत हुआ मानो हिमिकरीट घारण किए हुए विस्व सम्राट् भी सारिपुष की मृत्यु घोषणा कर रहे हो । उसके मुख का स्थाभाविक उन्लाम

न जाने कहाँ विलीत हो गया, उसका धारीर अवसूत्र हो चला और आने बढ़ने की सक्ति उसमें न रही । उसे प्रतीत हुआ मानो मेरा सम्पूर्ण प्रयोग

निजींब हो गया है। 'मानव मेवा का प्रत धारण करने वाले सारिपुत गुन्तवर हैं।' रह रह कर यह भावना उसके मस्निप्क को मधने लगी। तब क्या यह सब बॉप है, पर्म के आवरण में क्या वे राजनीतिक वाल वल रहे हैं। किन्तु उमका हुयय इमें स्वीनार नहीं कर सका । सारिएव पर उसे थदा थी और विम्बान था कि तथागत के में भरत असत्य बाणी नहीं नहेंचे । तब स्वा होगा? वह भमभीत हो उठी । समीप ही ब्रह्मपुत्र नव हर-हर करता हुआ वर्ते हिमाण्डादित चट्टानी पर प्रवत्त वेग से बाये बढ़ रहा या । प्रावा का भ्यान उन पर था। उसे आज सम्पूर्ण प्रष्टति निर्जीव और गून्य प्रतीत हो यी

दे रही थी। वह देख रही थी जन्मताबा हे बीच विने हुए मारिपुत, नवा अपने पिता की। उसका धरीर सिहर उठा। उसन मनी द्वर पर जान हुए पश्चिता का अस्पन्द आणी—'स्त्र न समय भा उनका नर नहां कर सकत । अर्थनका का न्यू**ल होती हु**ई

थीं। भविष्य में होने वाली सम्पूर्ण घटना उसे नेवो के सम्मुल म्यप्ट दियायी

थनना जोड आयो। उस प्राप्त हा आया। इस असर आत्माका गर्ह अपर्यातः। च अपना आस्पतः ५० । सम्बन्धः सः । उसने दुइ स्वरः में



मारिपुत्र के द्वार खुळे हुए ये और दोनो सैनिक अन्दर में। डावा ने दूर से देखा और प्रमन्न हो उठी । उसे निरुवय हो गया कि मारिपुत इन

उठा कर पुछा--- कीन ?

षाहती हैं।"

×

वर्ष निया में शीन में स्थापूल हुई वालिका को देल कर सैनिकों औ दया का गयी।

कपिन कथ्ठ ने उत्तर दिया-- दीत के कारण गरीर अवसप्त होना ना रहा है। बाहर वर्षा हो रही है। केवल इस भीपण वेला में विधान

समय घर पर नहीं हैं। वह बड़ी और द्वार पर जा पहुँची ! सैनिकों ने दृष्टि

बालिका भीतर गयी । दोनो सँतिक मदिरा पान कर रहे थे, हुछ ही क्षण परवात् वे पृथ्वी घर किर पढे। और वेस्थ हो गये। बाबा में सारिपुर भी आवस्यक बम्पुएँ उटायी और बीरे से बाहर हो की । उसने द्वार दुगकता में बन्द कर दिया और आगे बड़ी। यह जानती थी कि रिरापुरी के मन्दिर के अनिरिक्त सारिपुत और नहीं नहीं का सक्ते। दूर पहाड़ी पर फरनों के मध्य वह सुन्दर देवालय स्थित था । वह आगे बढ़ रही थी। और पर्वतीय बायु उसके घरीर को येथे डाल रही थी। किन्तु बहु प्रसम् थी। दूर पर उसने देखा एक पविक सारू पर जा रहा है। बाबा ने मम्पूर्ण शक्ति लगा कर उसे पुकारा और रिशपुरी तक पहुँचा देने की माचना थी। पविक न उसे याक पर छाद छिया।

सद[ा] सद[ा] सद व्यक्ति अपने द्वार पर मुनकर ध्यान सान तथागढ

र मक्त चौंक उठे । उन्होंने पूछा-- कीन ?' विरुपरिचित सबूर कण्ड न उत्तर दिया---'से हैं।' निर्माय को उस भोषण नामिश्वा स जब सथ जिसक्छादिन विसरी

हुई शक्ति पुन' लौट आपी और वह उठ सड़ी हुई 1



निव्यत के बाहर पहुँचा दूवी ।'---शीधना करने हुए डावा ने कहा सारिएक उसी प्रकार निश्चल बैठे रहे । 'बिलिये । इस भीयण बेला में गुप्त मार्थ पूर्णतया सुरक्षित होग । 'पिता और बहुन को लोकर मुख्ते भीवित रहने की इच्छा नहीं।' 'नही, आपको चलना ही होगा'-बाबा की बाणी में दृहता थी। 'हट न करो बहन । मुक्ते यही रहने दो ।' मेरे इम अन्तिम अनुरोध की उपेक्षा मन कीविये, मारिपुत्र सीम

भावी अञ्चल्ति की सूचना देशा आवस्यक जान सारिपुत्र आबा है

मेयाश्वय पय अन्धरार की काली चादर में दका जा रहा या। रापि की लाव्यता बढ़ती जा रही थी। बह्मपुत्र का भीषण एवं हुएवं को कपिन कर वहाया। उस अर्थ निधा में दुर्गम पथी को पार कर दोनों सन्दे

बान्दग बार्ति पूर्वक सम्पूर्ण घटना स्वकर विचारमध्न हो वसे । कुछ क्षण परचान् उन्होंने दावा की ओर मृत्य फरा और उस सारिपुत्र को मृत्त मान भ तिम्बत के बाहर पहुँचा देने का आदम दकर उठ खड़े हुए। मारिपुत्र के

की बाणी में क्षोज था। अत्यन्त कच्ट से उन्होंने कहा---'में मृत्यु से र उरता विन्तु तुम दोनों को विनत्ति में डालकर मेरी आत्मा अपिक स

'किंदु में आपको बचाऊँगी ! तथायत मेरी सहाबता करने।'

'यह नहीं हो सबता बर्न, पिनु तुम्ब शब्दम को योग आयति में बाहर

अपने जीवन की रक्षा में नहीं करना चाहता ।'

'भूव तक करने का नमय नहीं । राज-प्रतिनिधि के सैनिक आते हैं

होंगे। चलिये, बीध्र पिना को सूचना देकर स्प्त पहाकी मार्गों ने में आप

पलिये ।

ने समीप जा पहुँचे ।

में प्रयाण करेगी ।'

माथ सामा घटना के समीप बल पहें।



वही धूमिल सम्या मी---मलिन और उदाम ।

एकाएक दावा रुक वयी ।

'अब मुक्ते विदा दो मारिपुत्र !' -मजल नेत्रो में डावा ने नहीं। 'आवा..' सारिपुत्र का कठ अवस्ता हो बया। वे आये नहीं कह संके

'शवा ..' सारिपुत का कठ अवस्य हो नया । वे आगे नहीं कह सर्व 'अब हम कोय तिस्वत की सीमा के बाहर हैं, यहां में आप निर्धि

भारत पहुँच सकते हैं। "निकी प्रकार कावा ने वाच्य नमान्त क्यां 'त जाने पिन बुदे सानों में सेने तिस्थल में प्रवेश किया कि मेरे हैं। कार्य केनुक्त रास्थल और तुन. ' नारिपुच का बाच्य उनके अभूओं ने दुर्म के दिया।

'सारिपुत । इस घटनासे अपने हृदय का दस्थ मन कीजिये। क्य

ही मनुष्य की कमोटी है।' योनों मौन थे।

दाना मान था। ट्रुप्ट शक्त परचान् सारिपुत्र ने नहा---'बाबा ! नुप्रहारा स्नेड १९ी प्रकार सर्वेत मुन्हे पत्र प्रदक्षित करता रहेगा।'

कठ तक आकर द्वादा की बाणी रक यदी।

'जब दिसा थो।' काट पूर्व स्वयों में सारिपुत में बहा। उससे नेय दर्ग है। यो। अधु कार्त में बहु मुंगान सम्प्रता और भी मुंगान हो उठी। उठी सींग सामित में ग्रामा न तथामन के उन्त पुत्रती के दिया है। स्वयूधे प्रतामकों पर जब उक्त सारिपुत्र दिलागानी पढ़ते थे बहु उसी ओर देवां पर्याग्या में बहु अस्पर्य हामा भी सर्वत्रा के जिल्ह विकास हो गयी। गर्मी में एक पींचे निवास की और लोट पत्री।

× × × × × पूर्व परिचित्र ध्वित सुन कर उसन मन्द्र उठाया । स्वर्गाविरि की

उपत्यका में स्थित वही नेनवोरी जोनका मन्दिर था। तिन्य की भाँति उमें पण्टें का रव था। सब कुछ ज्यों का या था किन्तु था राज्य और उदान।



110

भिश्क की बातें मून उपस्थित नायों ने क्षे कुछ हुन पर, कुछ मीन रह गए और धेप सभीन नेत्रों से कवहरी की ओर देखने तरी। चौरती बौक के-जिसे जाजकल पृद्धी बाजार कहते हैं---दक्षिणी दरशाने के ठीक उपर उन दिनो कचतरी थी। न जनना में में उसकी ओर कोई बड़ा और न कचहरी से ही किसी ने फांना। यह देख भिश्क के अपरो पर उस भूवन मोहन मुस्कान की रेचा शिव वई जो यदि पुरा के मुंह लगशी है तो उसे देवता बना देती है और जब नारी के अपर पर सेलनी है तय नापी कुलटा कहलाने लगती है। समजेत बनसमूह पर उसी मुस्कान की मोहनी डालते हुए जमने यहा"अच्छा अब चलचा है। कोतबाती

आकर तनिक कोनवाल का भी होमला देख लूँ :" [17

पौष की सम्या सिहरने लगी थी। वाल-मही में अमीर जान नवामह की दिव्य हवेली के दूसरे लण्ड वाले कमरे में तबला उनकते लगा था। दीवारी पर हमें बीधे में दीपाधारी में मोमवत्तियां के गुल सिन चुके थे। लिडकियों के छन्नों में फुलों के नजरे लटकार्य जा पूर्व थे। देका, साएगी और मजीरे की सहायता है अमीरजान पील पर 'रियाब' कर रही भी-'पपीहा दे, पी की बोखी न बोख।" अभीरजान 'स्थायी' समाप्त कर 'अवरा' पर आ ही रही थी कि उसी

गली में हलबल की आहट लगी। उसने देखा कि सामने की किर्कियों में बैरयाओं का समूह बाहर क्ला निकाल गली से उत्पृक्तावदा कुछ देख रहा है। अमीरजान भी उठ कर लिडकी पर आयी। उसने देसा कि मूहे अपाहियां और भिवारियों को रूपय पैस ल्डाता मस्त मथर गति से मली में भगद भिश्चक क्ला जा नहा है। उसक पीछ पीछ आदिमियों की बडी भीड है। नगर की प्रसिद्ध सन्दरी वीजागनाय अपन अपन भरोखों पर डटी हें परंतू भिक्षक की बोल्ड बन्नोदक बक्कर ज्यान में हा अस्त है, उसे उपर



tt. 可完計的實際 नि' एक की बार्ड जुन उपन्यत जाना में में कुछ हंन पत्र, ६ इ मॉन

रह गए और धार समीत नहीं से कनहींर की आर देवने नहीं। बीती बाद ६ नोबम बाबद व मुक्ती बाबार फर्डा है-वीदानी प्रशाह के रे के अनेर उने दिनार के रहती और ने अनुषा में से उपाधी और कोदबार जोर न ४ वहरा म हा किया न जोदर। यह वस नि दूस स जपा गर

रत न वर्ग मादक मृत्यान की रामा क्लिक नहें की वर्श पूरा के नृह नगत है भी अबे देवता अना देश हैं और अब नाश के अपर पर भवती है इब नार्य हुन्दा इनदान अवदा है। त्यवन बनववृह् पर अपी मुन्दान का नामना का का कुछ अपन कहा अच्छा अन्य नामक है। कापनारी

इ. ६१ १.नक ६.च सा बता ना होताना द्वार जी।" 1 10 1 केरे की मध्या विद्यान करी गए। यह स्थाप म मनीर जान वराहि

को दिन्त देश हैं। के द्वार नाजा शान क्यर म तकाहा रनकन देशा थी। रा राह्य पर दन होरत भी बागा करते में नामका गढ़ स गृव मिन गुड़ ने। ACTIONS & WORLD THE REP SPECE AT THE WINGS HIPT

sie ante si sreat a aniena rea ve fena me chi di-11 8 1 2 42 6.07 4 50

ANTER OF SE TO MARK BE WELL OF MY SE PET 41 'E IN' and a range of a great of the series of last and

रेवने का अनवर ही नहीं मिल रहा है। सीडवें का यह अपमान उने नहन ने हुना। वह स्वयं भी नगर की प्रतिद्ध वेरवा थी। उसके रूप की तृती मेंडगी थी। मुर ने उने असुर की शक्ति है रखी थी और तान ने उने नेतन बना रखा था। रहते दोनों के उल वह हुदवों पर आधिपत्य बमानी भी बीर उनके सारे रस का शीवण कर अत में उन्हें बरबाद कर देती।

टोक उसी समय बयत वी मस्तिय से एक वर्ष, कुरूप और बूडी भिक्षारित साहर निक्की। यह संकड़ी पंचर स्था पंचाना पहने थी। उत्तवा कुरता तार तार हो रहा था और चादर के नाम पर उनके पान एक बोधडा मात्र था। उसने भी बेरसा मिशुक नाम्ब देसा। उत्तके मूर्तियों ने भः पंपने मूह स एक जिलित स्वति निक्की दिसे होती भी पड़ चकते हैं सामी भा हाथ को नांड्या पर सरोर का नारा भार दकर वह तन मई आर अपना र है कारी का नांड्य का विवक्त है है होती के नांड्य बार्क बेटा, पावान। जोनो को आपका हुई कि कुछ किशुक कही चुड़ी की इन्हेंच न वे रिन्तु किशुक ने दृष्टि और बाणी दोनों में कीशुक तर कर बहा—मार्स दूर कही। अक्टा जा हो वही कुछ तेती जा। और उनने गीत में परपर पुनी की कागा पर प्रभागनान की शांक हान दो। बूटी बरड़े में हुआ तक न वे पानों थी कि नियशक आपने जा।

पहुँच चुनों थी। सभी उत्सुक ये कि देखें, कोनवाली बन्न कर कंगी निगटवी है। भिशुक्त के बन्न, और जीवट, धरूब कोस्न और धारत जात, कुररी की नियुचना और नगीत की नाथना आदि का हान बनारत का

आ तक न देपायों थी कि बिर्मुक आगे बड़ा। ...और कोनवाली आ गई। निभुक्त के पीछे चलने वालों की सस्था अब नक मुत्रार के अगर

क्षणा क्षणा जागना था। बाच हो नये बहोजी राज्य के नायरे कानूनों की द्वरपतीन पारदी का स्वाच भी कार्या के बता को अपन मन्य से ही निव क्षणा था। जान का का मूर्त निवस्ता था कि आब अपनुष्ठ निवाह और 'अवनि देखन जोगू' जेगी कोई बात होकर ही रहेगी। क्षाया है ही तमायवीन कार्यी से मार्गरिकों की उत्काज बान बारी भी। पणु वस केंग्रिकों सामने की कीरे तमायवीन कराने वसे, नायर जिनाने केंग्रिकों वस्ता केंग्रिकों को स्वाच केंग्रिकों की सामने की स्वाच की कीर तमायवीन कराने वसे, नायर जिनाने केंग्रिकों को अपने की सामने जहीं आब द्वारिकों वाई होगी है, यह कुर्ज मां जोरे कुर्ज केंग्रिकों ने तमायवीन कार्यों में में सिक्ते, क्षणान जोरे केंग्रिकों केंग्रिकों कार्यों केंग्रिकों केंग्रिकों केंग्रिकों कार्यों में में सिक्ते, क्षणान जोरे कुर्ज केंग्रिकों कार्यों में सीक्ते, क्षणान जीर कुर्ज एक सामने की सीक्ते, क्षणान कीर कुर्ज केंग्रिकों कीर तमायवीन कार्यों में सीक्ते, क्षणान जीर कुर्ज एक सीचा जीर कुर्ज पर लगाने। याने के

दिलिया डीफ सामने महक की पटरी पर कोलवाओं थी। भिशुक में कुएँ से अभी जगन पर नाहे ही कोनवाजी की ओर मुंह उठा कर आवाज समामी —"तुनुर कानवाल साहब! भिष्कु ज्याही पर आया है। बचा हुकु होता है।"

कातवाठ साहव सिनंक तर तथा और दो एक वरकन्दान, जो



वेंसी बांसो से अध्युरम उत्तीवते 🕎 बद्दद करंड में पूछा था—'स् पोरी की तपस्था जब भी पूरी नहीं हुई।' और तब बहु उने पहिचान क पुन दूसरी रात जाने का बचन दे बैठा। तभी से उनके मन में एक ही परन

परकर काट रहा था कि स्वा स्वामी हुई बस्तु पुन: प्रहुण की जा तकती है! मंगलागीरी उसकी पत्नी थी। परन्तु उसने उनका मृत जीवन में है ही बार देशा था। एक विवाह की रात और दूखरे तेरह वर्ष बाद पिछली रात। भिशुक्त ने अलवर के एक ऐसे चारण कुछ में जन्म लिया वा विमर्क

नीविका का साधन कहरवा-पांड न होकर अखि सवालन पा। उसे जन में ही ब्यामान और राज्य सचालन की शिक्षा मिली थी। शेरह वर्ष की

बय में उत्तरण विवाह अंधलमेर में हुआ। स्वमूर राजस्थान के प्रतिब बारण थे। किनने ही राजाओं ने 'लाख पमाव' में और 'कोड पसाव' में ने उनका सम्मान किया था। उत्तर वयन में उन्होंने नामद्वारा जाकर कण्डी बसवा की थी। उसके बाद ही कल्या के क्य में उनके घर में प्रथम गतान ने जन्म लिया। कन्या पिता के आँफो की पुतली हो गयी। वन-याने ही पुत्री पर भी पिता का रम चढ़ने लगा। पिता पूत्रा करते और पुत्री गोविन्दलाल की प्रतिमा के समक्ष नाचती शई वोतली बोली में पाती--"मै तो गिरिघर आये नाम रीं।"

भिशुक की विवाह की रात की वह घटना याद आयी अब सातपरी समान्त हीने पर ससुराल की स्त्रियों ने उसको कविता और दोहा सुनाने के लिए कहा और यह मीन रह गया या। कारण तद तक उसे अपना

भ्रीर कोड पमात्र कहेते उ-मित्रादये-त्रश्चत्रमाद कोट प्रमाद।

^{*}राजस्थानी नरेदों के यहाँ प्रधा थी कि वे किसी कवि या चारण की सम्मान करने के लिए हाथी, थोडा, भृमि, हथियार जन्त आदि मिला कर उसे ३० ४० हजार रूपये की रक्स दिया करने था। उस हो लाख पसाव



११६

जल रहा या और भूमि पर बायम्बर पडा या। उसी पर बंठ गांजे की दम लगाने हुए वह विचार करने लगा। अभी तक बह इस प्रश्न की सीमाना न कर पासा था कि जिसरा रयान कर दिया उभका पुनर्शहम उचित है या नही, विधि और निषेक दोनो पहल उसके नामने जाने थे। त्याची हुई बस्तु उच्छिप्ट है। मानी उने ग्रहण नहीं करते । नारी नामना पव का अन्तराव है, में नामक हैं। पुत- दूसरे ही क्षण वह सोचला--'वीरी मेरी नहप्रमिणी है। वह जैसी नुष्दरी है थैसी बुद्धिपती भी। उसमें मुक्ते कर्तव्य पालन में सहायता ही मिलेगी। उसका मेने पाणियहण किया है। में उसे बचन से आया हैं। वह मेरी प्रतीक्षा करती होगी।' प्रदन के इस सामाजिक पहल ने निर्णय कर दिया । यह अभिभृत सा थोरे-थोरे खोह के बाहर निरला । एक नाव जीली ।

उम पर बैठ उसने उसे घारा में छोड़ दिया और स्वय भी विचारमारा में बहु बाता। उसके हाम मन्त्रवर् नाव खेते रहे थे। वह सोच रहा था कि महि बहु न होती तो खिपाही मुक्ते अवस्य पकड लेते। में लाकी हाथ सका मादा और पैदल था, वे ट्यियारवद, पोड़े पर नवार के। न जाने केने पहचान लिया दुष्टो ने। अन्तिनयर से नटेसर तक थार मारा। पर उन्हें भी पता बार गया होगा कि आब किमी से पाला पता है। सब तो पीछे रह गये, परन्तु यह ससरा हवलदार, उसने अत तक पीछा न छोड़ा। नाप निनारे लग यथी। सिक्षक उम पर से उतरा। रेती में खुटा गाइ कर उसने नाय उसी में बांध दी और स्वय गाँव की ओर बला। भीकी चौदनी में शुगाल भद्रमा की ओर मुंह उटा उठाकर भीरकार फर रहे ने। गाँव में पहुँचने ही कुत्ते उसके पीछे पीछे भूकने चले। मगलागौरी के आंसारे के सामने पहुँच भिक्षक ने देखा कि ओसारे में काठ की चौकी पर वैठा वही हबलदार मुखो पर हाथ फेरना हुआ। यह स्वर से रामायण की जीपाइयाँ

के किनारे स्थित अपनी मही नुमा खोह में प्रयेश किया। देविट पर मृत्युक्षी



ग्रन्प-गञ्जल

120

यहाँ चली आसी ।"

ने यहा ।

'अच्छा ! '---गौरी ने विस्तय का अन्तित्व करते हुए कहा ।

लाजा! " गेंदा ने कहा और यह खिलियलाकर हैंभी फिर तत्काल स्थत

हो, यह गीत को गात्रो, जीजी, ! "म्हाने चाकर रायां जी, गिरवारी होकर बोली--'अच्छा जीजी, ये सब गीन नुमने सीचे कहाँ ?'

नीचे सबी होकर कितना बिल्लाची। रोब तो तुम बार बने भोर में ही चंडकर क्या क्या याया करती थां । आज तुम्हारी आहंट ही नहीं मिन्ही ।

अरहुउ गेंद्रा प्रक्त पर प्रक्त करनी जा रही थी, विना यह खपाल किये, कि उत्तरे प्रश्न योगी के द्वाप पर हवाड़े की चोट कर रहे हैं। किर गौरी ने कहा-- 'इसमें बनाने की क्या बात है ? मेरे बाप भी गोबिय गर के उपासक थे न । उन्हीं से यह सब सीला है । उनके गीलोक धाम जाने पर अब दाबादों ने भेरी सब सम्पत्ति छोन की वो में अपने माना के पास चली आयी। मामा ने जब काफी राज की मेना में बोकरी की तो में सी

'अच्छा एक गीत गाओ जीजी ! मध्दे बडा अच्छा तगना है'--गेरा

'इस समय जिल ठिवाने नहीं है, येदा ! फिर कभी गाऊँगी।' 'नहीं, मेरी अच्छी जीजी ! दो ही एक कड़ी मना दो --- गंदा ने बच्चो की तरह मचलते हुए कहा। अन में गोरी को गंदा के हठ के सामने भुकता पता । उसने शन्य शस्या की श्रार दल मृतमृतामा श्रारम्भ किया-एको से वा दरद-दिवाणी मर्गदरद न जान कार्य। मर्था ज्यार नज विज्ञा को संद खोर पाला हार ।

'अच्छा नवा ? नोचा या तुन्हें भी साथ छेती' चलुं। विडनी के



int sould

in the second of the fifty of the contract of and the same of the same of the same that The first of the court of the state of the state of

THE ROLL OF THE PART OF THE PART OF THE PART OF

error of a profession to the contract of the second the first of the pre-time of his tell in the life of

a amen d a e est tote tote est tot

white the to the second of the second of the to the series associated as a series of the particular

in the second of the second of the



वत्त्र-मञ्जा

ऐने बम्बू कार्ट बाजों के बीच में होकर एक जहना और एक लड़की

225

चीक की एक दूकान पर आ निते । उसके बाबो और इसके और सुपने में जान परता या कि दोनों निख हैं । वह अपने मामा के नेस घोने के निमें दहां नेने आपा था और यह रनांई के लिए प्रतिना । दुकानदार एक परदेवी में मुभ गरा था, जो मेंग भर गाँचे पावड़ी की बहुड़ी की गिने दिना हुनी

न था। 'तेरं पर बड़ों हैं ?

मगेर में "--- और तेरे ?

"मार्के में"---वहाँ चढा गहनी है "

'अवर्शित के बैठक में, वे मेरे माबा होने हैं ?"

"में भी मामा के यहां जावा हूं, उनका घर गुढ़ बाजार में हैं।" इतने में दुकानदार निवटा और इनका मौदा देने लगा । मौदा लेकर

दोनो माय-साथ चले । बुछ बुर वा कर लडके व मुनकरा कर पूछा---

"वेरी 'कुडमाई' हो नई ?" इन पर लडकी बुछ अस्ति पड़ाकर -- पर् फहरूर दोड मई और लड़का मृंह देखवा रह गया ।

इसरे, तीनरे दिन सन्तीवाने के यहां इचनाले के यहा, अवस्मान दोनां मिछ कानं । महोना भर यही हाल गहा दा तीन बार लडके ने फिर पूछा, "तेरी पुरुषाई हो गई ?" और उनके जबाब में नही "पत्" मित्रा।

एक दिन जब लडके ने बैमी ही हुंगी में बढ़ाने के निए पूछा नो सड़की लड़कें की मभावना के विश्व बोन्धि— हो हा गई ।

कल दसले नहीं यह रयम न क्टरहुत। माठ , पटको भाग सई। बढर न पर का राष्ट्र जा। पारत संगत जनक कर यापा संदक्षेत्र दिसी, अत्र उत्तर का उन भारता स्थाः न्याद एकं हुन पर परभर

मणा और रह वासँखार के ए. ने इस एक देव । सा**मने नहां कर**



"नहीं तो सीधे वर्लिन एईंच जाते। स्त्रो ?" मुत्रेदार हजारासि? ने मुनकरा कर कहा, "लडाई के मामले जमादार या नायक के बलाए नहीं च उने । यहे अक्रमर दर की.मीनने हैं । तीन भी मीठ का गामना है। एक

नरह बद्र गए नो बया होगा।"

"गरेदार जी, सब है," लहनानिह बाला, "पर करे बचा ? हिहदा-प्रशिष्ट्रया में जा जाता पंग गया है। मूर्व निरुक्ता नहीं और लाई में दोन नरक ने चन्द्र की वावित्वा केनी मात्र कर पहुँहै। एक पाका ही बाव ता गर्नी भा काय ।

' उदमी, उठ निमना स कारे हात । बजीरा पुस सार जने सामी/प देशर खाई का गानी अहर केहा । बहारिह बाम हो गई है, बाई के परवाज का पहना बदान देशा ।" यह बहते हुए सुद्रदार मारी गरिक में

तक्षर जगाम छा।

वजाराधिक पठदव का विद्यवस था। याग्दी व गाँउपा पानी भर कर लाडिक बाहर फारना हुआ बाजा---'से पास वन गया है करो

कोनी के बादमात का नवण । इस २४ वड विक विकास एक और उदाया

TENTRE A PROPERTY AND A STATE OF THE STATE O

111. . . 1 . 15. . .

* ** ** 4">



[1]

दो पहर रात गई है। अधेरा है। संशादा छाया हुआ है। बीपमिह माली विसहुदों के बीत टिवो पर अपने दोनो कम्बल विछाकर और लट्ना-सिष्ठ के दो कम्बल और एक बराव कोट ओड़कर सो रहा है। लहुना-गिह पहरे पर खरा हुआ है। एक अन्ति नार्दि के मृत्यपर है और एक बंध-मिह के पुत्र के गरीर पर । बोचिमह कराहा ।

"वया बोपमिड भाई, क्या है ?"

"पानी पिछा दो।"

लातामित ने बटोग उसके मुँह ने लगाकर पूछा--"वहां देने हो ?" पानी पीकर बोधा बोधा-"करेनी पूट रही है । रोम-रोम में नार दी इन्द्र ह। दीन बज न्हे हैं।"

"अच्छा भेगी सरमी पहल ला ।"

'ओर तुम ।' ' मर पास निगड़ो है, और मुन्हें वर्शी लगनी है, पर्माता जा रहा है।"

"ता में नडी पहनता, चार दिन ने तूम मेरे रिष्—"

"मेर पान कुनरी नरम जरमी है। बाज सबेरे ही बाई है। विराय न मम ब्न-ब्नकर भेज रही है। यह उनका भेरा करे।" या कहतर लहुना भारता कोड उतार कर बरनी उतारत समा ।

' 44 EFF ZI 1'

और नहां न्हेंड ' या बहरूक नाही बहरू यापा का उपने अवस्थानी अन्या प्रता दे अन्य बाल आका ताल और आन वा क्री 28 TEARS (87 11 45 54 HE REE W. H. 44 623 C41 11 1

4 # 1 + 1 - 1 - 1 7 F 1



"स्रो साहर, हम लाग हिन्दुस्तान कव बार्वये s"

"तहाई सत्म होने पर । नहीं, नया यह देख प्रमुप्त नहीं ?"

"नहीं महरूब, विकार के ने मने यहाँ कही? याद है, पाराण न नर्ज गहाँ के पीछे हम नाम क्यापनी के जिन्ने में शिवार करने पर '-"महाँ के पीछे हम जब नहें पर समार पे और आप का साननाम नरहुत्या रास्त्रे के एक सहिर में जब नहांने को रहाया था।" "देशक पार्व कहीं का "-- सामने के बहु नील बात जिल्हा कि होनी पार्ट में ने कर्म न दोशों भी और आप को एक सोता के में नामी और पहुंचे में हिक्सों एने जकार के मांध विचार सेलने में नाम है। क्या साहब, विवार से देशा है कर इस नीजवाब का निष्का सम्बन्ध में हैं आपने कहां भी हिंग से में सुन मोलाब का निष्का सम्बन्ध में हैं।

यहे-बड़े भीत ! दो-दो फूंट के तो हार्ये ("
"त्रो लहलांगह, दो फूट कार इन के ये : नुमने सिगरेट नहीं पिया ?"

"पीता हूँ सहव, दिवानन्त्राई के आता हूँ"— कहकर जहनासिह सहक भ मसा । अब अमें, मदेह नहीं रहा था। उसने अद्भव निरमय कर किया

कि प्रवा करना चाहिए ?

अपेरे म किसी भोनेवा^क स बह टकराया।

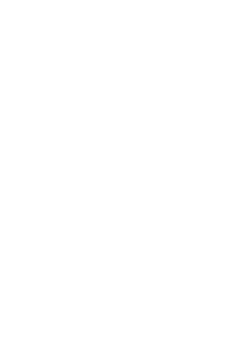
"कोन वजीरासिह?" "हा, प्रयो लहना? श्या क्यामत आ गई? बरा अस्ति लगने दी होती।"

[x]

"होता से आसा। क्यामत आई है और लपटन साहब की यदीं पहनकर आई है।"

"वमा [?]"

पता "लपटन शाहक या नो सारे गए है या कंद हो यए है। उनकी वर्दी पहनकर यह काई जमन आया है। सबदार न इसना मुझ नहीं देखा, मेने



पर दे बारा और सहस्र "आह" बीन गोड" बहने हुए विस हो राउँ।
लहनाहर् ने तीनो गाले बीयरर सदक के बाहर एके और माटब का
पर्माट कर मिनशों के पास जिलास अक्षा की तलामी जी। तीत-बार
िलपाफे और एक बाजरी निवास कर उन्हें अपनी जेड के हवाले किया।
नाहर की मर्छा हडी। लहलांगड हम कर प्राप्ता, अधा लगडन
गाल्ड ' मिजाब कैसा है। आज मने जहुन कार गीओ। यह सीओ कि
मिल निमरेंद पीले हैं। यह मोला कि जनाधारी के जिले में नीज गावे
हाती है और उनके दो फूट चार इन के मीम होने हु। यह शीखा कि मुमाइ-
मान वानमामा मनिया पर जल चडाले हैं। और रुपटन साहब सात पर
अवने हैं। पर यह तो बहो, ऐसी बाफ उर्दू करा में बील आये ? हमारे नपरन
माह्य तो दिना ईम के पांच लक्ष्य भी नहीं बोल सकते थे।"

832

का स--

लहना ने पत्रकत की जेवा की मलाधी नहीं की थी। माठक में मानी

प्राप्ते में अचाने के लिए दोनों हाथ जब से दार्थ। लहनामिह करना यया- वारशक तो वर्षे हो पर माध्ये कालहना देनने

बरम रुपटन माहब के साथ रहा है उसे चक्या देने के लिए चार अभि वाहिए। तीन महोत हुए एक पुरकी योज्यी सर यांच स आया था। औरपी क बच्चे होत की नावीज वांटना था। और बच्चा का दबाई बांटता था।

भीषरानंबर व तीचे सका 'बहाकर त्वका राजा रहता था और **पहा** शरता था कि अमनर ३९० वर्ष ३५०३ र वट प्रवहर उसस ॥ विमान

चंद्रान के विद्यालय ना साहत तथ साम्या हाइस्थान मंची

आभगताना । १ के अंदर दा प्रश्निय के बच्हाचायां कि

কিললি বা বা বা বা বা বা বা বা কৰিব কৰিব

हल्हरम् सार्वाच वाच वाच वाच वाच वाची।

और गांव स्वार अस्त । । । । । ।



हरेड सम्बन्धकका बन्द को तरह लगट निया । किसी का स्वयत्त्र हुई कि अञ्चलीतह के दूसरा परस्त्रात्त्र परस्त्रसम्बन्ध नहाई के समय कोट तिहल आया था। यूना थोट तिस के प्रकास संस्थातन कोटिया हुआ 'योथी' नाम साथक होता है। और हुआ

स मन्द्रतन्त्री ह्या ह्या हुवा 'सवी' नाम गावक हाता है। बोर हुवा एती बन्त रही वा बेधी की बाजसङ्ख की आधा स 'दत्त्रीजानदेशायाय' कट्टारी। बनायांसङ वह रहा था कि बेस सनस्य अट कास की बृधि

करूपारि । बबागिनिह बहु गहा था कि वेता यतनात अर काम की शृणि कर नृता त चिप्पक रहेरे हैं थे अब में बोधानीक़ तृत्वार के पीठि याथा था। नृबंधार - केट्रत्रीमिद्ध न थारा हाल नृत, और लगामाण पाष्टर द प्रवर्श नृग्य-वृद्धि को गराह रह व और कह रह च कि तुल हाता नो साव संव

पुरावन्त्र का पराह रह व बार कह रह व एक पूर्व हाता पा साम वर्ष सार वा । इस तवाई का वाचाय तीन नीच साहिती बार की बाई पानी स सुन वा सार कहान पाठ स्थापक यह स्थित वा व वहीं का प्रस्तात का सीमार

ना भा । कहान पाछ उनापान कर दिया वा । वहीं व भटनाड दा बीमार धान का मारियों कही, वा काई वह घड के बन्दर-बन्दर बा पर्देषी । पीन्यन बन्दराज नवडाक वा १ नुबद्ध दांत हात बड़ी गर्देष प्रवित्व । देश विवे मामुणी

त हो बोध कर एक मार्डा में सामक किराय नव बोर हुमरी में सामें राजी गई र च बरार च बहुतांमक का क्षेत्र में गहुर को बाता बाढ़ी राष प्रभाव यह बांकर राज दिया कि बोरा पांच है जबर देगर मायनार र बायोग्स रवर में बरी

रहा जा जह नाथा के रिराहा बचा। अनुना का छारकर मुद्दार देनी नाम प्रदेश रहना व बहा-नाम दान द कमन र रोग्यदार र के समस्य है। दो देनी

1 17 H Her's



क्रय-विकय का भादर्श

भी य्याशं हर दुवें ' रक्षा भारत, बहु एक जावधी को चोर-चोर टहलता हुना का रहा है,

नानन ता, कोन है ?"

भाषा न माहन न पूछा।

नाहन व बवाब दिया---में तो नहीं बामचा बाबा । पर नेरा व महाराम

काई तथा विभावता स्वतः है, जिलक जातव की मृज्य जायव्यकता ही हा है याना----व हमारे नगर के वोस्त्र है । सलकत्मा और सम्बर्ध जेन नगरी

याना---व हमारे नगर के बोर्य हैं। रलकत्मा और यम्पर्ट नेम नगर म इनदर बरा बड़ा दुखान है।

भारतम्म द्रमा प्राप्त १ दूरान को एक बेंडरी नार्यावयो की हुई गर रा १ । कन्या तथा बरबू है कि विक्रण पास द्रांती है, उनसे मूल ही मूल रणे १९५४ है। नार अराज उनकी प्रस्तावत है। हो रोजी सन्त वनाइप किस्स

पहन है। सार अशास अपको स्थ माइत। कोई पनी बात बनाइए निगर स्वका नारनता पर प्रवास पहन

चारा-----विहेस्स्ताः । तत्र इत्हाः स्वत्या स्वत्या चार्यः वाह स्वहत्। नोकतः वह इत्योद्धः स्वतः के त्रा या स्वत्यान स्वत्यान साम सात्रः वा वहतः है। तत्र समाव इत्या हार्यः स्वतः वोचा त्रा वा साव संवया वहार्यः वा

करते हैं देश तसके क्रिकेट राज करते हैं है है जा के देश का से के हैं कि है रहेंदें हैं है का कार्यन की कर जे एक रूप रहेंदिया के हम के हार है है है



बहप-सञ्चय

240

उनने पूछा—ऱान दक्तनी रात को सोने के बनाय रोते नगे हो रामधन ? पर रामधन हिचकियाँ मार-मार कर रो रहा था। कोई जनान वह उस उमम कैसे देता ?

क्स दता' आयन्तुकं ने किर पूछा—आखिर बात क्या है रामयन दुख नो बताओं।

बतानी। रामपन ने नव अपना नारा बुल-मुल उब दूकानदार से कह दिया। इसका करु यह हुआ कि दूसरे दिन से उसे हलबाई की दूकान छोडकर देंग

इसका फेल यह हुआ कि दूसरे दिन में उसे हनवाई की दूकान छोडकर इस नमें दूकानदार के बहरे नोकरी निक पर्ड । यर पासनक को उन्हें की अपेशा हुए आगम था। यह दूकान किशी एक चीज को नहीं. बस्ति बस्ति चीजों की थी। वेहेंट सावन तेल, कमा,

एक भोज की नहीं, बहिल बहुनेरी भोजों की थी ! बहेंट माइन, तेरह, क्या, संबं, श्रा, दूवरेन्ट, बच्चों के तन्द्र-नरह के विलोगे, छोचा!, छाने, योगा-बाय के प्लेदन, कलम, स्वान, स्वाही, फानटेन, योगों के विज्ञान, यूट की

बाय के प्लेट्स, कलम, बबास, स्वाही, छानदेस, बीधे के विवास, यूट की पालिस, बीने—नामव्ये यह कि दीनक व्यवहार में आनेवाको संकी बन्दूबर की बहु दुकान थी। एक पार में कहैं, तो कहना होचा कि उससे दुनाचार जनरफ सर्वेष्ट थे। वही रामध्य को केवल दाय पेट थोजन नहीं, पालु नकर

जनरफ सब्देंद थे। यहाँ रास्त्रमान को केवल प्राप्य येथ सोजन नहीं, बर्ल् निक् इस क्यों निलने थे। साने के लिए बुशनदार ने एक होटल में प्रस्कात दिया था। कल जकरण वर रामयन उस होटलवालं की थी सुत की बात रास और इस कारण वढ़ उस रामयन से (शंक क्यों) घोजन का लागन मान ही से लेता था। दुकार पर उसे नदेंदे दस बसे से रास के सी बसे तीर

रहना पहना । अब वह सूनी हवा न भीन के सकता था धूम मुक्ता था, और अपने मेरियम के मानाव्य में माना नवता था। धरी-वनी होत्स में प्राच्यान महत्त्व में उन कुछ पेग अन्ताम के पर हो मिन दाने थे। और इस नइत वारतीय हाम्म महान वह वंदान बचा उना था।

इस नेरह चार-पाचि रामि महान वन वेराहर हवा रना था। किन्तु रामधन हा अब इह का हुई हावन गना था जिस हम जपन पेरा चुड़ा होने मोन्य बेनेन हो एटर १४८ १४ १४ १ व १ एम हुए। में रामियन



183 पॅल्प-स्टब्स पर पर अपना जो वसन बरवाद करने हो, क्यों न उसकी राजि-पाठमाणा में विनाओ। अभी पद्म कोमें नो बहुत जच्छा होगा। बम, फिर बचा था, रामवन रावि-पाठशाना भी पहने लगा। इसी तरह दी बाल और बीत वर्ज । अब रामधन को वेतर में १२) मिलते थे। अ। महीने की बचन वह अब उसमें बराजर कर ही रहा था।

इन तरह कुल मिलाकर अब उसके पान समभन पांच सी व्यव ही गये थे जी मेजिन येक में उसी के नाम से जमा थे। उन्हों दिनो जगत बाबू का एक सकान बन रहा था और उस मकान में

उनका मारा इपया लग चुका या । आहे के दिन थे, माल करीय-करीब बुक गया था। और नया माल मंगाने के लिए अब उनके पास और रुपये नहीं रह गये थे। मोच विचार में बैठे बैठे वे इनने उदान में कि चितामाद उनकी मुद्रा में स्पष्ट भलकता था। दूकान बद्राकर जब दे पर बलने लगे.

नी रामधन ने पूछा--बाद शी, अयर आप मुक्ते माफ कर दें, तो में एक बाउ पूर्व ? आप आज किमी बिना से दुवे हुए जान पहले हैं : जगत बार--विकित गुम उस चिना को दूर नहीं कर सकते।

रामधन-लेकिन बाबू, कुछ मालूग भी तो हो । मंने आपका बहुउ नमरा धाया है। अगर किसी काम आ सर्च, तो आप मुक्ते उसके मीके में दूर क्यों रलने हैं ? जगर बार्--- पूछ रुपयं की जरूरत आ पड़ी है। पूजान में माल इस

कदर कम है कि अगर एक हजार रुपय का और इस्तजाय न हुआ, तो दूकान उटा देशों पडगां । उसके बाद बना हागा नही साचना ह । चाई तो मकान क आधार पर क्षेत्र मिक सकता है। पर यह बात है कितनी बहरजादी की कि मकान पूरा कर भी न पास और उस ग्रिको स्थन की नीवन जा आये !

प्रमानवरम्बिकतस्याते जारकाशासा । बीवी संउसे उत्तरकातः

ह नाचर का सानि सग हाता है। तथा करू क्या न करू, **कुछ समध**



गज्य-सञ्जय जननवार बोडे-मैरी मृहियी ने रूप गत में रहा था रामधन का

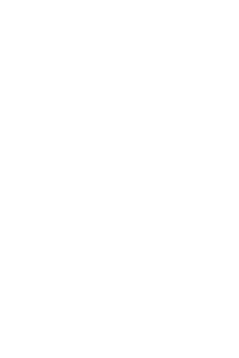
रपया बहुत फलता है । इस साल जिनना लाज हुआ उतना कभी नहीं हुआ या । इसने तो जन्छा है, दूढ़ान में उसका एक भाने का हिम्मा कर दिया जान । सो इस साल को जो आमदनी हुई हैं, उसके नुम्हारे हिस्ने की राजस ही सौ के लगभग होती है। पांच को तुम्हारी जो पूंजी है, वह इसमें जलग है। बुल मिलाकर 300 । हाते हैं। ये रुपये या तो तुम मुध्त पल ले ही. या दुनान के हिन्से के रूप में जमा रक्ष्यों। मोहन इसी समय बोल उठा--उस दिन से गमधन जगन वार की

इकान में एक आने का हिम्मेदार हो गया। चाचा--- नेकिन रामधन की उप्रति का यह इतिहास तो अभी प्रारम का ही है। इसके बाद को उसका अगरी विकास हथा, उसकी कथा भी कम रोचक नहीं है। लुप्टि का बह चक बड़ा विचित्र है। किसी के उत्थान

के साथ किसी का पत्रन मिथित है, सलग्न है, कोई वही जानता । जगउ बाब् एक दिन दम जनार समार को छोडकर चलते वते । और तब रह गमें, उनके वे बच्चे, जो अभी पढ़ ही रहे थे। दुल-मूख तो जीवन के साथ लगे है। किन्तु काल-चक्र तो अपनी गति से चलता ही रहता है। अगत बाबू की मनुष्य की पहचान थी, वे रामधन की विकासभीत प्रतिभा और ईमानदारी में परिचित थे। परन्तु उनके देहानमान के बाद, उनके बड़े लड़के, जो युनिवर्मिटी में पढ़ रहे थे, रामधन में परिचित न थे। कुछ आबारा दोस्तों ने उनके बात भर दियें । और उसका फल यह हुआ कि रामपन को उसका हिस्सा देकर उन्होंने उसे दुकान से अलग कर दिया ।

यह सब कुछ हजा किन्तु रामधन के हृदय ये कोई जनार नहीं जाना या। दुकान में अलग होकर जसने अलग दुकान तो कर ती, पर जगत बाब के परिवार के प्रति उसकी श्रद्धा का भाव अब भी कमें नहीं हुआ था।

588



१४६ गस्प-सम्बद्ध

हो चुका, बहु हो चुका । उनका उपयान ता आदबी समय आने पर करेगा हो । चाचा—एक दृष्टि में तुस्हारा यह बहुता ठोक है । पर प्राप्त होता यह है कि लोग अर्यापक काम में होने वाली एकन को अपने निमी उन-

भीग में आते हैं। किन्तु रामधन ने ऐसा नहीं किया। उतने उस रक्ष्म की वस्तुआ का मूक्त पटने के खकट-काल के किए मुक्तित रकता। भोडन---अल्डा किर।

वाचा—उसकी दूनान इच बात के निष्ट भी प्रसिद्ध थी कि एक तो उसमें माल विद्युद्ध और नया निष्ठात है, सूबरे भाव-काद करने की आर्क-दमनता नहीं पड़नी, नव वच्छुओं का दाघ निर्दिश्त है। कोई भी व्यक्तिः पाठे यह बच्चा हो ता, ज्या जाय, वायों में कोई भलद न होता।

स्य 🔻 ।

चन-विकास का आरही

भेदिन-तो स्वनिवयं का आहार आगा एट कर्जा राफ ताम भौति तिसी बास । ताकि विक्य का परिचाण बढ्टा १४ । प्रस्तुओं का कुछ देव बार्ने पर लाभ के एक अंश का विराय कार वे कर में मानन रास्यः

बाद, वो उन समय काम आवे। जब बस्तुओं का मन्य घर गहा हो। बस्तुए सिपु और नहें दो बाव और सबके (तर दाम एक हो ।

मित्रा—हो इस सार बट म तो दशे हैं। चिचा-भतीये ये बाने कर शहर जिस समय पुम कर लॉट रहे थे उस

वेस्य रामधन भी उधर से आ निरुत्ते ।

नीहन मीयने नवा—मनुष्य धुरु भग होग है। कीन बानना था

कि एक अनाम बालक एक दिन दनना बड़ा बादमी वब बामगा।

कहानी-परिचय

आत्माराम

भी प्रेमचन जो को सर्वोत्तम नहानियों ने आधाराम एक है। वेशे प्राम का गहरेवाफा मुनार महारेच अपने तोने को जहुन बाहुना है। और सर्योगाम तोने को एक हने जाने की दौर में उने अवस्थित हुआ दिन जा महै। इस धन की प्राणि ने उनका मन ही बच्च जाना है और नह पने

की ओर उन्मुख हो जाता है। उस घन में उसने पुष्प कार्य निये और आज भी येदों में उसकी कीर्ति गार्ड वाती है।

भी येदी में उसकी कीर्णि नाई जाती है। भ्रम्भवद भी की पहारिताओं को प्राया पहाली के लिये सभी गुना से नुस्त्र है। मर्मनुप्त होने के साथ उत्तरभें को एक बात सबसे विद्याय है यह मुहाबिरी का प्रयोग है। हिन्दी माहित्य में इनने नुस्तर बस से मुहाबिरी का प्रयोग करने बाला अप कोर्ड भी मही है। इनकी अनेक बहासियों के नमान नह

करने बाजा अन्य कोई भी नहीं है। इनको अनेक बहानियों के समान यह कहानी भी प्रामीण वातावरंख को लेकर है। चरित्र चित्रण भी दृष्टि में भी प्रेमकरद जी कहानी लेलको से सबसे यड़कर है।

भी भेमकर त्री कहानी लेखको से सबसे सहकर है। महादेव का चित्रण यहा स्वाभविक हुआ है। गांव के सुनारो में आय भी अनेक ऐसे दिखेंगे जिनमें सहादेव के पूर्व जीवन से पूर्ण सास्य दिलेगा।

ने भार प्राप्त पान भी गांचों में हैं जिनका प्राप्त नाम लेना प्रयाहुन समका नाता है। यन मिलने पर उससे होने बाला गिलनेन भी स्वासाधिक हो है।

धन मिलन पर उसमें झुल बाला पांच्यनन सा स्वाभाविक हा है। रोचकना इस कहानी में बहुन है। प्रायम्भ करने पर समाध्य के पूर्व र पाना समय नहीं। सराधिनेहार भाषा के साथ उन कहानी सर्वि

छाड पाना सभव नहीं । सुक्षाविनेदार भाषा के भाष वह कहानी सीवों के जीवन की एक कांकों भी प्रस्तुन करनी हैं।



240

शका रुख वे ।

महरमक के हके हैं है। स्वामी साविकों की जब बाई। पन नानी नी नवरणा नाने क्या। क्यांगर की जान से उपमोनना दिश्यों जान नवीं। फ़रश्वमण क्यां पूर्व दिन कह हुम्यों के प्रमान की शा। जाई ना जान हुआ कि रूपया नवीं है। वहां बीड पूप हुई पर गढ़ खबें। अल में

ना जान दुवा कि रूपना नहीं है। यही बोड पूप हुई पर गढ धार्य । अन्त में महत्याय कुपायें गये। उहार्ज अपनी अनुनाई ने यह बन्ता हुन कर दी। इन है परचान अपने पर चाँच गयें। अब स्मुक्तन की महत्यान मेनीन का मृत्य जान हुना। उहार्ज गुग

प्रमण्ड विश्वास्त्र के प्रमण्ड प्रमण्ड क्षेत्र के प्रमण्ड के प्रमण्ड वर्ष के प्रमण्ड के प्

आपा नर्वन्त्रम क्योग्यन प्रमाणी यून्य, कहानी जिलागार्थ तथा मनारककरे। विभोजाय केकाले में उन्होंन करनी चाहिये तो बहुन नाम नमान्त्रका मूँग्ये साप निमालनी चाहिये। आजन साचा का प्यान नर्नी राग्ये उनकी पढ़ी दक्षा होती है से भूतमय की है।

इस्सायन

यो बन्दायन साथ भी बनों को यह कहानी पुरान प्रविद्या की भान का तक मोदी प्रसाद करनी है ।

श्यक्रम क्रांचि को बनाई है। बाबा के द्वित्यू क्यार्ट को वही घुमा की शोरू में देवने हैं। उस कोई मान मार्ग रहत्व तथा नहीं थाना। पर क्रांची पंचान क्यां को कर रहे दिवस हो के बनाव में में क्रांचित कर सार्टिमार परिचार क्यां को कर रहे हैं कि एक है रहता का क्यांना रहे । इसार्ट



करने नामों ने उने एक ममा का नमापनि ही बना जाना। ऐसे कार-उन्दूर्म की रोग कमी न कमी मुक्ती हैं। इण्डुट्राम को भी रोग पूरी मामण दिला हुआ रूप मरना उनकी मामणें के जातर जा अन कह छान गया। पाननु मुद्रमानय की भूत में 'में जो जगह 'में एव बया। और ज बही 'में की जगह में 'में 'बी पण्डुराम की मुमापिन ने पहना प्राप्त किया नो होंगे के प्रोप्ताने सुरत्ने प्राप्ता हो। यह। और नमापिन जी ह मह जरका कर नीचे जगाने पर काम होना तता।

भी हरणवेद अभार भी गोड 'केब' हासाय के मान अनक है इनको इस बहानों में भी शान्य गर्वत्र दर्गमात है। हास्य रम की पहास्थि वा हिरो नारित्य में वहा अभाव है। वेहब भी का इस क्षेत्र में माय अग महीत है।

परिवर्तन

भी बच्चापरि जी विषादी हारा विशित्त यह बहुती भारतीय सम्हर्म स्वक्त करनेवाली हैं। प्राचीन आरम में न्यास्थित को मादा अप्योधक दी। हार और जांग श्रांकित होते थे। एक बार हार राता ने वर्षी पी पीढ़ी बच्चे को भारता बती रहती थी। और बन कर उरता चुका से विया जाता वह सुमार्थ कमान आर बना रहता। इस बहुता में यह अनोत नेवा

अंदरण और उपका पुण गांवावा से उपयोग में जाय हुए समारि में मारावाय करते ज बीर बांध्योग को बिहुकी हार मस्मीतित होत्वर उन्हें "र मारावाय करते ज है। उपने व कार्यात अन्यत्व को पूर्वीय आसत्य मार्य के दिवर जाता प्रण्या है। दिवस को यात्र के रास्त्र जाता पर पूर्व करता का या करियद होता है। "पान्य हा जाता है। उसकी महत्याय सम्बद्ध नेतर हैं।" को साम को मारावाय हुए का मुक्ता मुक्त के साम मार्यात मार्यात िर् आश्राता है। जिस करने के जिस उसने उतना प्रयत्न किया उत्तरी तरस्या को बड़ी बड़ मजन होने का समय आया तो एक नर्रे बात हो रही। हर प्रकार से पुत्र कथा में असमय होने पर उस नागी ने अपने हड़य के हुक्टों को बायारिक के बच्यों में एक दिया। ईपी से उस्य हुइय को उस न्यों के आस्मनमर्थन में सीनत बना दिया और कायारिक बच्चे को इस में कायाहर मोहहुमी नेत्रों के देखने नका ।

रहानी में रोवकता है जिल्लामा सबंघ बनेमान है। आया संस्ट्रानित्य बोर कोमल है।

ग्रे!ग्रे!

> पार्चा स्टब्स्स स्व पर्वे अस्तर

्रसाधिकात्राच्या । स्टब्स्ट्रेस्ट्रिक्ट

यत्य-सञ्चय भाषा नरम तथा कहानी के योग्य है। वर्णन के प्रभावज्ञानी उन ने कहानी को नवीव वना दिया है।

डाया

मुंथी उना हुमारी द्वारा निवित्त यह कहानी बर्यना पक्ष गैंथी की हैं। डावा तिष्यमी लामा सस्दर्भ की एवनात्र कर्मा है । तथारन की पूजा के परचान् उठन पर जब उमे जात होता है कि गुन्तवर होने का अपराज लगाकर सारिपुत का मृत्यु दण्ड दिया जाने को है तो उनकी जीवन स्थाट के लिए वह चल पड़नी है। मार्च के अनेक विष्न वाधाओं को लीपनी हुई वड सारिपुत्र के पास पट्टेंबनी और उन्हें हटाने का उपवस करती है।

मारिपुत पहुँत तो इस पर नैयार नहीं होते पर अन्त में मान जाते हैं और बह स्पान छाड़ देन हैं। मृत्तवर की भागने में सहायना देने के अपराप में विता पूजी दण्ड के मानी होते हैं। वहानी में भाषा की बरलवा तथा धारा प्रावाहिकता है। सारिपुत्र की

बीबनरक्षा के लिए हावा का त्याय प्रशसनीय है।

मूली ऊपर सेज पिया की मूत्री उपर सब विया का थी कह नी की गरीन रचना है। कामों के भरीत बैभव की मायाय काणी के नुद्धों के मुख से आब भी मुनी जाती है । उन्हों में से बढ़ भी एक है। परन्त् रह की की कवन प्रणाली ने अनीत की बर्भमान म ला खड़ा किया है। "गठक पढ़ने ममय भूल जाना है कि वह फट्टारी" पह रहा है। भिश्नक का मध्य-द्राव उसका अपना हो जाता है। यह कहानी

म तल्लीन ही पहला है। उस बनाने में किस गण्डा करा जाता था। जिस्स संस्कार परेगात

वा आर जिसको प्रकार के रिया गारिनोषिक की पालमा हो नुकी थी।



न भारत दो कोई स्नव ए मा भित्र नहीं में एक बार्ड भी निकास जान और निकास से बाधा ने 'पड़ा निजनूसन देखक की सफलना उसनी दृति के संस्कृत कर को दो देखन से नाम होंगी है किसी जाई देखन से नहीं है

रहाता को पूर्वरी विभारता उनन निहित्त राज्यत्ता है। यह कहाती इतनी राज्य है कि पहल क रित्र प्रारच्न करन बारत विना गमान्त किय इत कहर नहीं गकता।

क नाते तथा पाठ वाला जा भाना है यह उपाठ गाइन गाइक र हा ने नाम मुझ्ल जाता जा पहला है या जा। "गान रहा वा हामों इस कराट" में अपों अपनी है, ज्याद वा सार्थ से दहा कह हाम है। जान गाम जोग पार्थ और नाह गुरू जीपहार है। इह पड़ा है। जान गाम जोग पार्थ और नाह गुरू जीपहार है। इह पड़ा है। जान गाम जो या तथा पार्थ जाता पुरुष तिलाई है। देश हो ने सान जो जो हो तथा जे तथा जो मान गाम पुरुष कर ने बनाइ पांच की जाता जो हो जाता है। जा गाम का मुद्र प्राप्त की की मुद्र प्राप्त की नजाह पांच की का है। जाया का सामा के जन्म पड़ा हो। तथा के देश जो जाता है। इस हो। जाया का सामा है। इस प्राप्त की स्वस्त की स्वस्त की

कवरीक्य का मारची

हर बराबी और बहाबहर प्रवक्त । हारायक रुप्तर हर परिशेष के सबसे 1887 एंड एड एड एड से क्षा पत्रक हुई र प्रवासी हरते पत्रक रिंग में के प्रकार के प्रवक्त प्रवक्त प्रवस्ता के स्वास्त्रक के प्रवक्त स्वास्त्रक के स्वास्त्रक के प्रव स्वास्त्रक रूपा स्वास्त्रक स्वास्त्रक स्वास्त्रक के प्रवक्त स्वास्त्रक के प्रवास के स्वास्त्रक स्वास्त्रक स्वास

